RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021

शिव आमंत्रण
आध्यात्म की नई उड़ान
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष 08 | अंक 11 | हिन्दी (मासिक) | नवम्बर 2021 | पृष्ठ 16 | मूल्य ₹ 9.50

पर्व विशेष
दीपावली का रहस्य

ब्रह्माकुमारीज़ का लंदन स्थित ग्लोबल को-ऑपरेशन हाऊस बना आध्यात्म का ज्योतिपुंज

50 साल से पश्चिमी देशों में आध्यात्मिक ज्ञान जारी, हजारों लोगों का बदला जीवन

वर्ष 1991 में राजयोगिनी दादी जानकी ने की थी ग्लोबल को-ऑपरेशन हाउस की स्थापना

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड/लंदन। *पश्चिमी देशों में ब्रह्माकुमारी संस्थान के विस्तार के बारे में बता रहीं हैं यूरोपियन सेवाकेन्द्रों की प्रभारी और ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती, उन्हीं के शब्दों में जानिए विश्व सेवाओं का विस्तार...*

वर्ष 1971 में ब्रह्मा बाबा ने एक ग्रुप लंदन भेजा था, जहां से वह न्यूयार्क जाने वाले थे। उसमें दादी शीलइंद्रा, बीके जगदीश भाई, बीके रमेश भाई, चेन्नई की बीके रोजी बहन (जो अब इस दुनिया में नहीं हैं) और डॉ. निर्मला बहन। यह पांच लोगों का समूह वर्तमान में जापान के सेवाकेन्द्रों की प्रभारी बीके रजनी बहन और मुरली दादा के घर में रहे। ग्रुप के लिए एक माह विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इसके अलावा ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े कुछ भाई-बहन भारत से वहां गए जो लंदन में निवास करते थे। इन लोगों के सहयोग से बहुत अच्छे कार्यक्रम चलते रहे।

लंदन में पहली प्रदर्शनी स्प्रीचुअल एसोसिएशन द ग्रेट पर्सन की ओर से नाईट्स ब्रिज में लगाई गई। इन सेवाओं को देखकर जगदीश भाई ने कहा कि परमात्मा शिव बाबा का निर्देश है कि आप लोग केवल चक्कर लगाकर नहीं, बल्कि वहां कुछ स्थापन करके आएं। सेवाकेन्द्र भी बन सकता है। यह सुनकर बहुत खुशी हुई। उन्होंने कहा कि आप 12 लोग हो जिन्होंने यहां सेवाकेंद्र खोलने और उसकी पूरी जिम्मेदारी लेने के लिए निमंत्रण भेजे हैं।

इसके साथ ही अक्टूबर 1971 में टेनिशन रोड पर एक छोटी सी कुटिया में आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग का संदेश देने की शुरुआत हुई। डॉ. निर्मला बहनजी ने राजयोग शिक्षिका के रूप में भाई-बहनों का राजयोग कोर्स कराया। इसके बाद वह दक्षिण अफ्रीका की सेवा के लिए चलीं गईं। बाद में सितंबर 1972 में राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी आईं। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार वह तीन माह के लिए आईं थीं लेकिन सेवाओं को देखते हुए वह रुक गईं और दिसंबर 1973 में भारत वापस आ गईं। फिर वर्ष 1974 में वापस डॉ. निर्मला बहन आईं जिसमें बहुत सारे कार्यक्रम बनाए गए थे।

जून 1974 में एक्जीबिशन होने वाला था। इसलिए अप्रैल 1974 में संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी को परमात्म आदेश मिला कि आप विदेश की सेवा पर जाएं। दादी के साथ ही मैं भी लंदन आ गई। उस दौरान परमात्मा शिव बाबा ने दादी जानकी से कहा कि तुम्हें अपनी साइलेंस की शक्ति से मधुबन जैसा वहां मधुबन बनाना। जैसे माउण्ट आबू में बाबा का कमरा है वहां भी बाबा का कमरा मिलेगा और रूहरिहान करेंगे।

इस पर दादी जानकी पहले दो सप्ताह के लिए आईं लेकिन बढ़ती सेवाओं को देखकर रुक गईं और दक्षिण अफ्रीका की सेवा पर निकल गईं। उस दौरान दक्षिण अफ्रीका के लुसाका में नए सेवाकेन्द्र की स्थापना हुई थी। उसके बाद दादी लंदन आ गईं और फिर सेवाओं का विस्तार होने लगा।

1971 लंदन में आध्यात्मिक ज्ञान की शुरुआत हुई

50 साल पूरे हुए ईश्वरीय सेवाओं के

50 भाई-बहनें समर्पित रूप से दे रहे सेवाएं

दादी से हर किसी को मिलती प्रेरणा

वर्ष 1974 से लेकर 1978 तक दादी जानकी लंदन में रहीं और उस दौरान यूके और अन्य देशों में भी आध्यात्मिक ज्ञान का संदेश पहुंचाया। दादी योगबल और त्याग-तपस्या का कमाल था कि उनके सामने उस समय जो भी जाता उसे अपने देश में सेवाकेन्द्र खोलने की प्रेरणा मिलती। इस दौरान न्यूयार्क की मोहिनी बहन और सुदेश बहन ने भी इन सेवाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मील का पत्थर साबित हुईं सेवाएं

"लंदन में 50 साल से ईश्वरीय सेवाएं जारी हैं। इस आध्यात्मिक ज्ञान से हजारों लोगों का जीवन बदल गया है। परमात्मा शिव का ज्ञान और उनके वर्से के लोग अधिकारी बनेंगे, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है। दादीजी ने जो विश्व परिवर्तन अर्थ यहां जो बदलाव की नींव रखी इससे निश्चित ही एक दिन परिवर्तन आएगा।"

राजयोगिनी बीके जयंती, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, लंदन

परमात्म प्रत्यक्षता का समय आ रहा

"पचास साल पहले लंदन में रोपा गया आध्यात्म का बीज आज विशाल रूप धारण कर चुका है। लंदन से ही अनेक यूरोपीय देशों में सेवाओं का विस्तार हुआ है। हजारों लोगों का जीवन बदला है। विदेशों में तेजी से लोग आध्यात्म से जुड़ रहे हैं। शेष सभी आत्माओं को जल्दी ही बाबा का संदेश मिल जाएगा।"

राजयोगिनी बीके सुदेश, निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़, जर्मनी

दादीजी आज भी सूक्ष्म में सेवा कर रहीं

"आदरणीय दादीजी ने पचास वर्ष पूर्व जो बीज बोए थे वह आज फल-फूल रहा है। बड़ी संेया में लोगों ने अपने जीवन में आध्यात्म और राजयोग को अपनाया है। आगे भी यह सिलसिला ऐसे ही जारी रहेगा।"

बीके हंसा, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, दादी जानकीजी की सचिव रहीं, आबू रोड

लंदन में 50 भाई-बहनें समर्पित

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिए जा रहे आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन से इन 50 साल में हजारों लोगों ने अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाया है। साथ ही अपने कार्य व्यवहार और कार्यक्षेत्र में अपने संस्कारों और मूल्यों से समाज को एक नया संदेश दे रहे हैं। ईश्वरीय सेवाएं के लंदन में पचास वर्ष पूर्ण होने पर हाल ही में स्वर्ण जयंती समारोह मनाया गया है। इसमें पूरी दुनियाभर से लोग ऑनलान शामिल हुए। ब्रह्माकुमारीज़ के लंदन स्थित ग्लोबल ऑपरेशन हाउस में वर्तमान में 50 भाई-बहनें समर्पित रूप से अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

पिछले अंक से क्रमशः

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक
■ शिव आमंत्रण

अलबेलापन की आदत ▶ आलस्य के कारण की खोज कर स्वयं से पूछना है कि हम आसली क्यों हैं?.....

जीवन का बहुत बड़ा दुश्मन है आलस्य

आबू रोड । खुद की चेकिंग नहीं करते, चिंतन नहीं करते और इसको दृढ संकल्प की रीति से जीवन का निजी कार्य नहीं बनाते इसलिए अलबेलापन आता है। जैसे भोजन खाना एक निजी कार्य है तो वह क्या कभी भूलते हो। आराम करना निजी कार्य है। अगर एक दिन भी दो चार घण्टे आराम कम किया तो चिंतन चलेगा आज नींद कम की। जैसे इनको इतना आवश्यक समझते हो वैसे स्व चिंतन और स्व की चेकिंग को भी आवश्यक नियम बनाओ। अमृतवेले रोज इस आवश्यक कार्य को रिफ्रेश करो तभी सारा दिन उसका बल मिलेगा। अगर फिर भी अलबेलापन आता है तो अपने आपको सजा दो। पश्चाताप करना चाहिए। अभी पश्चाताप कर लेंगे तो बाद में नही करना पड़ेगा। आलस्य और अलबेलेपन को खत्म करने के उपाय सर्वप्रथम हमें स्वयं को हमेशा पुरुषार्थी और ट्रस्टी होकर रहना है। सिर्फ एक बाप की श्रीमत को फॉलो करना है, मनमत पर नहीं चलना है। स्वयं का आलसी होना स्वीकार करें यदि आप आलस्य से मुक्ति पाने के इच्छुक हैं तो सर्वप्रथम आपको मानना पड़ेगा कि वास्तव में आप आलसी हैं। पहला क़दम यही है कि आप आलसी होने के अवगुण को पहचाने ताकि उसका इलाज ढूंढ सकें। आलस्य के कारण की खोज करें आपको स्वयं से पूछना है कि आप आलसी क्यों हैं। आलस्य के कुछ ऐसे कारण होंगे जिन्हें स्वयं आप ही जान सकते हैं। खुले दिल से उसके कारण का पता लगाएं फिर उसका इलाज शुरू कर दें।

आपको सोचना चाहिए कि आलस्य के कारण कितने अवसर आपने खो दिये, यदि उस समय आलस्य न की होती तो आज कितना आनंदित आप का जीवन होता। आलस्य तब आती है जब कोई काम में हमारा मन नहीं लगता रूचि से नहीं करते। किसी भी चीज को जब रोज एक ही तरीके से किया जाता है तो हमें बोरियत महसूस होने लगती है। जैसे खाने में अगर हम हर रोज दाल खाते रहें तो जल्दी ही ऊब जाएंगे। तब आप क्या करेंगे? कुछ अलग बना कर खायेंगे। यानि खाने में अगर वैरायटी होगी तो ही आपको हर रोज खाना अच्छा लगेगा। ठीक ऐसे ही अगर हम हर रोज

> **हमारे संकल्पों में बहुत शक्ति होती है जो हमें एनर्जी प्रदान करती है। पॉजीटिव सोचें। जैसे मैं कोई भी कार्य कर सकता हूँ। मैं बहुत मेहनती हूँ। मुझे सफलता अवश्य मिलेगी।**

एक ही तरीके से कोई कार्य करते तो हमें आलस्य जरूर आता है। इसके लिए हमें कुछ नवीनता करनी चाहिए ताकि कोई भी कार्य को हम रूचि से कर पायें। जिम्मेवार आत्माओं पर आलस्य और अलबेलापन दिखाई नहीं देता। इसके लिए अपने इस स्वमान की सीट पर अचल अडोल रहना है कि मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूं। स्वयं पर अटेंशन देना और ज्यादा नींद का त्याग करना। आराम पसंद नहीं बनना है। खानपान में संतुलन अपनायें कभी-कभी आलस्य का कारण खानपान का अधिक मात्रा में प्रयोग करना भी बनता है। इसलिए खानपान में संतुलन अपनायें, तली हुई सामग्रियों का सेवन अधिक न करें, और हमेशा खाना सीमित मात्रा में लें, क्यों कि पेट भरने से शरीर भारी होता है और जब शरीर भारी होगा तो स्वाभाविक बात है कि आलस्य आएगी। सोने में संतुष्टी प्राप्त करें 24 घंटे में 8 घंटा निरंतर सोने की आदत डालें, यदि उस से अधिक हुआ फिर भी आलस्य आएगी और यदि उस से कम हुआ तब भी आलस्य आएगी, सोने जागने में संतुलन अपनाने की आवश्यकता है। सबसे पहले हमें पॉजिटिव सोचना हैं निगेटिव संकल्प नहीं चलाने हैं। स्वयं के प्रति अच्छे संकल्प करें। ये नहीं सोचना हैं बार-बार की मैं तो आलसी हूं। अगर हम यही बार-बार सोचेंगे तो जो हमारे अंदर कार्य करने की क्षमता है पॉजिटिव एनर्जी है धीरे-धीरे वो भी नष्ट होने लगती है। इसलिए हमेशा अच्छा सोचें। हमारे संकल्पों में बहुत् शक्ति होती है जो हमें एनर्जी प्रदान करती है। पॉजिटिव सोचें। जैसे मैं कोई भी कार्य कर सकता हूँ। मैं बहुत मेहनती हूँ। मुझे सफलता अवश्य मिलेगी। अपनी सोच को बेहद की बनाओ। सभी के कल्याण का सोचो की कैसे सबका कल्याण हो तो बुद्धि खाली नहीं होगी, व्यस्त होंगे तो आलस्य और अलबेलेपन से दूर रहेंगे। मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ, जो बाबा की शक्ति है, वो मेरे पास है, जो उसका कार्य है वो मेरा कार्य है, मैं हूँ ही विश्व कल्याणकारी। सदा ऐसे मनन चिंतन से सब तरह के सूक्ष्म और विकार व माया के प्रभाव से मुक्त रहेंगे।

क्रमशः...

धर्म-ग्रंथों से ▶ इसी जन्म में हमें कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान प्राप्त होता है

कर्म किसी का पीछा नहीं छोड़ता

स्व-प्रबंधन

बीके ऊषा
स्व-प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू
■ शिव आमंत्रण

कर्मों की गुह्य गति को समझते हुए बड़ी सावधानी से कर्म करना चाहिए।

आबू रोड । वह सारे भागीदार भले स्वयं को निर्दोष समझें परन्तु वे सब अनजानेपन में पाप कर्म के हिस्सेदार बन गये। जब उसका फल चुकाने का समय आता है तो सभी को मिल कर ही चुकाना पड़ता है। कैसे चुकाते हैं? जैसे वह पाप कर्म को चुकाने के समय का संयोग आता है तो दूसरे जन्म में वे सब एक ही बस में सवार होते है और कहीं पिकनिक करने या यात्रा करने जाते हैं, अब इस जन्म में वह कसाई उस बस का ड्राइवर बनता है और जैसे ही वे पहारी पर जा रहे होते हैं और वह जानवर जिनको उस कसाई ने मारा था अचानक सामने आ जाता है और उसे बचाने के लिए बस का ड्राइवर बस का संतुलन खो देता है और वह बस उस पहारी से नीचे गिर जाती है और उसमें किसी की जान जाती और हर एक को कहीं न कहीं चोट लगती है। उस वक्त लोग यहीं कहते है कि ड्राइवर के गलती के कारण सभी निर्दोष लोगो को चोट आई। परन्तु कर्म की गुह्य गति के हिसाब से कोई निर्दोष नहीं था। जो निर्दोष थे वे किसी न किसी कारण से उस यात्रा में जा नहीं सके या फिर इतने ऊपर से गिरने के बाद भी किसी-किसी को एक खरोंच तक नहीं आती। निर्दोष को बिना कर्म किये दुःख-दर्द या भोगना भोगनी पड़े यह हो नहीं सकता। यह कायदा नहीं है। अगर ज्यादा लोगो के बीच भागीदारी होती है तो ट्रेन में जाते हैं और उस ट्रेन के कुछ डिब्बे पटरी से नीचे उतर जाते है और वे सारे लोग जख्मी हो जाते हैं या और ज्यादा लोग होते तो एक ही हवाई जहाज में इक्कठे जाते हैं और उस हवाई जहाज में कोई खराबी आती है और सारे के सारे खत्म हो जाते हैं।''

इस तरह कर्म की गुह्य गति को समझते हुए बड़ी सावधानी से कर्म करना चाहिए। तभी तो कहा जाता है कि कर्म कभी किसी को छोड़ते नहीं। भले किसी व्यक्ति ने कितना भी छिपाकर कर्म किया हो लेकिन मनुष्य स्वयं को उस कर्म से छुड़ा नहीं पाता है, उसका हिसाब उसको भोगना ही पड़ता है। एक बहुत सुन्दर दृष्टांत याद आता है:- ''दो मित्र थे, एक का नाम था महेश, दूसरे का नाम था सुरेश, दोनों की बहुत अच्छी दोस्ती थी। परन्तु महेश बहुत ही भोला इन्सान था और सुरेश बड़ा चालाक था। एक दिन सुरेश ने सोचा क्यों नहीं कमाई करने के लिए विदेश चलते हैं। दोनों अपने परिवार से विदाई लेकर समुद्री जहाज से विदेश गये। दोनों ने खूब मेहनत की और अच्छी कमाई की। फिर दोनों ने एक दिन सोचा कि चलो अपने देश वापस चलते हैं। अब इतना धन तो कमा लिया है जो आराम से बैठकर खा सकते हैं। वापसी यात्रा के समय दोनों मित्र समुद्री जहाज से वापस आने लगे। दोनों के मन में अपने परिवार से मिलने की खुशी थी। परन्तु सुरेश के मन में एक दुष्ट विचार चल रहा था और उसने सोचा कि अगर मैं महेश को इस रोलिंग से धक्का मारकर समुद्र में गिरा दूँ और उसकी सारी कमाई भी मैं ले लूं तो किसी को पता ही नहीं चलेगा। और लोग भी यही समझेंगे कि एक दुर्घटना थी। यह सोचकर सुरेश ने महेश को धक्का दिया और वह जहाज से समुद्र में गिर गया और उसका सारा माल और समान लेकर वह अपने गांव पहुंच गया। सुरेश ने महेश के परिवार वालों को बताया कि जाते समय ही महेश अकस्मात से समुद्र में गिर गया और वह अकेला ही विदेश में रहा था। अब वह सारा पैसा कमाकर आ गया है।

क्रमशः ...

क्रमशः **अंतर्मन** ▶ अमृतवेला रोज करें; चाहे सेवा में कितना भी व्यस्त हों...

भीड़ में कहीं एकांत लुप्त तो नहीं हो गया?

आध्यात्मिक उड़ान

डॉ. सचिन
मेडिटेशन एक्सपर्ट
■ शिव आमंत्रण

अपनी पवित्रता को नेचुरल बनाओ।

9)ईश्वरीय सेवा की गृहस्थी

सेवा बहुत अच्छी चीज़ है परंतु सेवा ऐसी न बन जाए कि गृहस्थी बन जाएं। रात दिन सेवाओं के जंगल में इतना खो गए कि योग, मुरली का पता नहीं। ऐसी जब सेवा कोई करता है तो संघर्ष होगा, फिर टकराव होगा संस्कारों में, ईर्ष्या जगेगी। यह बहन अभी अभी आयी और आगे जा रही है, यह बहन हमसे ज़्यादा पढ़ी लिखी है हमसे ज़्यादा भाषण करती है, हम क्या किचन की सेवा करें और ये लोग अच्छी सेवा करें, कोर्स कराने की, हम क्या कम हैं, यह ईर्ष्या है, फिर नफ़रत आएगी। ज्ञान मुक्त और योग मुक्त सेवा, माया युक्त और माया के अधीन बना देगी एक दिन, तो ऐसी सेवा नहीं चाहिए।

10) झूठ की गृहस्थी

पाप करना, छुपाना, इसमें श्रीमत का उल्लंघन करना छुपाना, कोई ऐसी चीज़ करना बाबा से छुपाना। पारदर्शी जीवन हो खुली किताब, इसमें छुपाने जैसा कुछ न हो। जब छुपाना और झूठ बोलना पड़े, तो अंदर ही अंदर दिल खाता रहेगा और ये झूठ बहुत बड़ी गृहस्थी है। हमारा मार्ग ही सत्य का है और एक चीज़ झूठ कि नाव जो है कागज़ की नाव है, ज़्यादा दूर और ज़्यादा देर तक नहीं चलेगी, एक दिन सत्य सामने आएगा। इसलिए यह जो 10 प्रकार की गृहस्थी है, इसमें फँसना नहीं है स्वयं को स्वतंत्र रखना है।

मौन खो तो नहीं गया?

आध्यात्मिक जीवन का सबसे बड़ा पुरुषार्थ अपने ही जीवन को साक्षी होकर देखना, मैं कहां हूं, कहां खड़ा हूं, कहां से यात्रा शुरू की थी, वह दिन याद करो जिस दिन बाबा के बने थे, वह समर्पण का दिन, वह पहली बार बाबा के प्यार में आंसू बहाने का दिन, वह मधुबन आने का दिन, वह सेंटर जाने का दिन, वह प्रथम सेवा का दिन, वह पहली-पहली सेवा, वह पहली-पहली प्रदर्शनी, वह पहली-पहली टोली, वह पहला ब्रह्मा भोजन, पहला अमृतवेला, वह पहली मुरली, वह पहली अव्यक्त वाणी और आज यह कौन सी यात्रा पार कर ली, कहां से शुरू किया था और कहां पहुंच गए। कहीं भटक तो नहीं गए। मैं के विस्तार में, शब्दों के शोरगुल में। मौन खो तो नहीं गया? लोगों की भीड़ में। एकांत लुप्त तो नहीं हो गया?, बाह्यमुखता में अंतरमुखता में व्यक्त तो नहीं हो गया?

गहन तपस्या की अग्नि में तपो

जब ज्ञान में आए थे तो कैसी अवस्था थी, कैसा उमंग था और कहां खो गए, कहां भटक गए, रात-रात भर जागकर तपस्या करने का वो उमंग, वो दिन बीत गए 8-8 घंटा योग का चार्ट, पूरी रात नाइट भट्ठी का उमंग कहां खो गया, सेवाओं में भटक गया? या मैं की दौड़ में या मैं के विस्तार में? यात्रा फिर से शुरू करनी है जहां थे वहा पहुंचना है या उससे भी आगे निकल जाना है। उस दैवी संस्कारों की तरफ रिटर्न जर्नी, उस निर्विकारी अवस्था की तरफ, उस मौन की तरफ, उस एकांत की तरफ, उस अंतरमुखता की तरफ रिटर्न जर्नी। देख लिया संसार, जूठी काया, जूठी माया, जूठा सब संसार, आपकी आंखो के सामने से संगम की घड़ी टीक-टीक होते हुए निकल रही है। बाबा गए, दादियां गई- कोई नहीं रहा कुछ कहने वाला। विनाश के नज़ारे आंखों के सामने प्रैक्टिकल में दिख रहे हैं। समाप्ति की घंटी बजना शुरू हो चुकी है। प्रकृति भी चींख चिंख कर पुकार रही है आखिर कब तक। माया भी अब थक चुकी है। अब तपस्या का शंकर स्वरूप धारण कर अपने सूक्ष्म से सूक्ष्म विकारों का विनाश कर अपनी पवित्रता को नेचुरल बनाओ। अब अलबेलापन खत्म कर गहन तपस्या की अग्नि में ऐसे तपो कि सिर्फ बाप की याद आती रहे।

विंध्य शिखर सम्मान 2021 से बीके निर्मला अलंकृत

शिखर सम्मान प्राप्त करते हुए बीके निर्मला।

■ **शिव आमंत्रण** ▮ **रीवा (मप्र)** ▮ ब्रह्माकुमारीज़, शांति धाम, झिरिया-रीवा की क्षेत्रीय संचालिका बीके निर्मला द्वारा पिछले 50 वर्ष से की जा रही विश्व कल्याणार्थ अथक सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। बीके निर्मला को विंध्य शिखर सम्मान 2021 से अलंकृत किया गया। यह कार्यक्रम मध्यप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष गिरीश गौतम, रीवा विधायक राजेंद्र शुक्ला, पूर्व मंत्री एवं रीवा के महाराजा पुष्पराज सिंह द्वारा स्थानीय कृष्णा राज कपूर ऑडिटोरियम के सभागार में रीवा के हजारों गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में किया गया। उनको सम्मानार्थ श्रीफल, शॉल, प्रशस्ति पत्र और मोमेंटो प्रदान किया गया। बीके निर्मला के निर्देशन में की जा रही उल्लेखनीय समाज सेवाओं में मानव कल्याण के लिए योगदान, स्वच्छता एवं व्यसन मुक्ति, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ आंदोलन, महिला सशक्तिकरण एवं महिला सम्मान, पर्यावरण सुरक्षा एवं जन जागरण आदि कार्यों का समावेश है।

बीके योगिनी को सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट से नवाजा

अभिनेत्री हेमा मालिनी द्वारा सर्टिफिकेट प्राप्त करते हुए बीके योगिनी बहन।

■ **शिव आमंत्रण** ▮ **मुंबई** ▮ मुंबई में कोरोना महामारी के चलते लोक कल्याण के कार्य में अपना अमूल्य योगदान देने के लिए बीएसईएस एमजी हॉस्पिटल की ओनररी एडमिनिस्ट्रेटर एवं संस्थान के बिजनस विंग की नेशनल कोऑर्डिनेटर बीके योगिनी को सांसद एवं अभिनेत्री हेमा मालिनी के हाथो स्विट्जरलैंड के सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट से नवाजा गया। इस मौके पर वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड के नेशनल सेक्रेटरी डॉ. दीपक हरके भी मौजूद रहे। वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड, यूके में ग्लोबल प्लेज कैंपेन शुरू किया गया था जिससे नागरिकों में कोरोना के प्रति जागरूकता लाई जा सके।

कोरोना वारियर्स डॉक्टरों का सम्मान

सम्मानित डॉक्टर सर्टिफिकेट के साथ।

■ **शिव आमंत्रण** ▮ **ठाणे।** महाराष्ट्र में ठाणे के श्रीनगर सेवाकेंद्र के द्वारा डॉक्टर्स और नर्सेस कोरोना वॉरियर्स के सम्मान में फेलिसिटेशन सेरेमनी आयोजित की गई जिसमें एनीवे निवारण निर्मूलन सेवा समिति के अध्यक्ष राजाभाउ सेठ, टीएमसी हॉस्पिटल की डॉ कंचन तलपाडे और सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सीता ने मोदी हॉस्पिटल, श्री हॉस्पिटल, ग्लोबल हॉस्पिटल और अष्टविनायक हॉस्पिटल समेत अनेक अस्पतालों के चिकित्सकों को सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। उसमे डॉ. भालचंद्र एस. देसाई, बालाजी क्लिनिक के डॉ. भोर, डॉ. अशोक तिवारी, डॉ. जिनेंद्र वीरा, डॉ. विपिन महाले, डॉ. मुकेश यादव, डॉ कांचन तलपदे, डॉ. मनिया आशीर्वादम्, डॉ. संजय वाखरे, डॉ. वागिश यादव, डॉ. विश्वास भोसले, डॉ. गोपाल दुबे शामिल थे।

शख्सियत

परमात्मा की दृष्टि पड़ते ही सारे सवाल गायब हो गए: अभिनेता सोलंकी

सत्यवीर सिंह सोलंकी

हरियाणा

हरियाणा के सत्यवीर सिंह सोलंकी फिल्म अभिनेता के साथ राजनीतिज्ञ, व्यवसायी और समाजसेवी भी हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़ने के बाद उनके जीवन में क्या परिवर्तन आया उनके ही शब्दों में जानते हैं, शिव आमंत्रण से विशेष बातचीत में उन्होंने अपने जीवन के अनछुए पहलुओं को सांझा किया। बातचीत के प्रमुख अंश...

> चाहे मेरा लौकिक कारोबार हो या फिर पारिवारिक जिम्मेवारी सब बाबा अपने आप संभालता है। बिजनेस सहित सब बाबा को सौंप दिया है।

■ **शिव आमंत्रण (आबू रोड)**

जीवन के प्रारंभ से ही भक्तिभाव की लगन थी। पहले मुझे अज्ञान काल में ही परमात्मा का साक्षात्कार हुआ। सुबह-सुबह मुझे ऐसा लगा की ब्रह्माबाबा लाल रोशनी के रूप में मेरे पास चले आ रहे। जबकि मैं ब्रह्मा बाबा के बारे में जानता भी नहीं था। मैंने कहा ये क्या चला आ रहा है? सुबह का समय था। मैं उठ कर बैठ गया, मैं देख रहा था कि ये तो मेरी तरफ़ आ रहा है। मुझे बहुत आश्चर्य लगा। मेरी धर्मपत्नी भी उठकर बैठ गई मुझे बोली क्या देख रहे हो? मैंने बताया ऐसे-ऐसे शिव भोलेनाथ दिख रहा है। बाबा प्यार से मुझे दृष्टि देकर चले गए। यह देखने के बाद मेरा मन व्याकुल हो गया और फिर भी मैं सोचता रह गया कि यह क्या है, कैसे दिखा मुझे? लगातार मेरे मन में यह सवाल घूमता रहा। इससे एक दिन पर्दा उठ गया मैं जब मैं एक दिन एक प्रदर्शनी देखी। उसमें सफेद वस्त्र में बहनें लोगों को समझा रही थी। मैं भी वहां चला गया और पूरी प्रदर्शनी समझी जैसे ही मैंन ब्रह्मा बाबा का चित्र देखा मुझे तुरन्त ही उसकी स्मृति आ गयी और मैंने बोला कि इनको एक दिन मैं साक्षात्कार के रूप में देखा है। तब बहन जी ने पूरी कहानी बतायी और मुझे परमात्मा में उस दिन से ही निश्चय हो गया। और मैं संस्था से जुड़ गया।

दादी ने मुझे निमित्त बनने का वरदान दिया

मैं जब पहली बार परमात्म मिलन के लिए आबू पहुंचा तो यहाँ का वातावरण देखकर मन स्तब्ध हो गया। मैं बाबा के कमरे में बैठा, हिस्ट्री हॉल, बाबा की कुटिया, बाबा का कमरा और शांति स्तम्भ देखा तो मुझे बहुत ही अलग अनुभव हुआ और मन हल्का हो गया। उसी वक्त दादी से मुलाकात हुई और दादी ने मुझे कहा यह बच्चा बाबा की विशेष सेवाओं के निमित्त बनेगा। यही नहीं यह बात लगातार तीन बार बोली। यह निमित्त बनेगा, निमित्त बनेगा, निमित्त बनेगा। उस समय मुझे निमित्त का मतलब नहीं समझ आया कि इसका मतलब क्या होता है। फिर मेरे को सब बोलने लगे कि ये निमित्त बनेगा अर्थात् विशेष सेवाओं के निमित्त बनेगा। पूरे मधुबन अर्थात् शांतिवन, पांडव भवन आदि का चक्कर लगाता रहा और मन ही मन सोचता रहा कि निमित्त बनूंगा? मतलब किस विशेष सेवा के लिए निमित्त बनूंगा। फिर मैंने बहनजी से पूछ लिया, सारे मुझे ऐसे क्यों बोल रहे हैं निर्मित्त बनेगा? दादी भी बोल रही थीं। बहनजी मुस्कुरायी और उन्होंने कहा कि भाई इसका मतलब यह होता है कि बाबा के जो भी कार्य होंगें उसमें तुम बाबा की बहुत अच्छी सेवा करोगे, यही निमित्त बनेगा का मतलब है। फिर बाबा मिलन हो गया। तब हम दिल्ली से सिर्फ़ 400 ही भाई-बहन आए थे। पूरे देश-विदेश से हम 2 हज़ार भाई बहन बाबा मिलन में आए थे।

परमात्मा से सवाल करने की बहुत उत्सुकता थी

कई वीआईपी लोगों को बुलाया गया था जिसमें मैं भी शामिल था। क्योंकि उस समय मैं तो एक फिल्म बना चुका था और एक इण्डस्ट्रियलिस्ट भी रह चुका था साथ ही प्रॉपर्टी का अच्छा काम भी कर रहा था। इसके साथ ही समाज सेवा बढ़चढ़कर करता था जिसके कारण मुझे दिल्ली में वेलफेयर सोसायटी का अध्यक्ष भी चुना गया था। साथ ही दिल्ली में किसानों के अधिकार दिलाने के प्रति मैं बहुत काम करता था। थोड़ा मैं राजनीति में भी शामिल था। ऐसे समय में हमें बाबा से मिलन हुआ। मैं पहली बार जब स्टेज पर बाबा से मिला तो मेरे मन में बहुत सारे सवाल थे। अब मन में ये चल रहा था कि अब तो हमें भगवान मिल ही गया है। बहुत उथल-पुथल था कि मैं भगवान से क्या पूछूँ क्या नहीं पूछूं? बहुत सारे सवाल हैं। दुनिया जिसे ढूंढ़ती है वह भगवान मिला है तो भगवान से मिलकर, खुलकर बात करेंगे ऐसा मेरे मन में था। तो मेरा जैसे ही नंबर आया मैं स्टेज पर चढ़ा उस समय सामने दादियां बैठी हुई थी। स्टेज पर चढ़ते ही ऐसा लगा मैं बादलों के ऊपर चल रहा हूं, उड़ गया हूं लगा कि जैसे मैं फ़रिश्ता बन गया। बाबा ने मुझे ने दृष्टि दी और फिर टोली दी और फिर मैं नीचे आ गया। यह अनुभव हमारे जीवन का अविस्मरणीय रहा। तब मुझे लगा कि भगवान से मिलने में परमात्मा सारे सवालों का उत्तर पहले से ही जान लेता है और उसका उत्तर बिना पूछे ही दे देता है।

व्यापार सहित सब कुछ परमात्मा को सौंप दिया

अब परमात्मा शिव बाबा से ना तो कोई सवाल रह गया और ना ही मेरे अंदर कोई भान रहा। मन इतना प्रफुल्लित हो गया था कि इसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। क्योंकि मुझे यह लगने लगा था कि सारे सवाल तो देह अभिमान आने से ही उत्पन्न होते है। जबकि परमात्मा की दृष्टि आत्मिक रूप में पड़ती है और सभी सवालों के उत्तर परमात्मा अपने आप ही दे देता है। क्योंकि परमात्म दृष्टि पड़ने के बाद मुझे देह का भान ही नहीं रहा। जब पाँच मिनट के बाद मुझे होश आया तब मैंने सोचा अरे यह क्या हुआ? उस दौरान परमात्मा में मेरा निश्चय और बढ़ गया। फिर क्या था मैं बाबा की याद में पूरी तरह मन बुद्धि से समर्पित होकर चलने लगा। तब से आज तक बाबा ने मुझे कहा सब कुछ मुझे सौंप दो। मैं बिजनेस सहित सब बाबा को सौंप दिया है। यहां के सभी लोग तथा शांतिवन के सीनियर्स मुझे बोल रहे थे कि यह सब काम को समेटो जल्दी घर जाना है। सतयुग आने वाला है। अब जब खुद और खुदा में पूरा निश्चय पक्का हो गया है तो अब मैं आत्मा-आत्मा ही आत्मा। तब से सारा काम बाबा सहज ही स्वतः खुद आगे आकर कर देता है। मेरा बिज़नेस भी सब संभाल रखा है। बाबा मिल गया मुझे और क्या चाहिए, कुछ भी नहीं चाहिए और सब लौकिक कार्य बाबा अपने आप ही संभाल लेता है, अपने आप ही चल रहा है सब। मैं कुछ नहीं करता।

मेरी सांसों में सिर्फ बाबा है

लौकिक कारोबार हो या फिर पारिवारिक जिम्मेवारी सब बाबा अपने आप सम्भालता है। थोड़ी भी किसी बात की चिंता नहीं होती है। जब कोई विघ्न या बाधा आती है तो बाबा हल कर देता है। अब बाबा का घर ही अपना घर है। बस दिल में एक ही तमन्ना रहती है कि दुनिया को मैं कैसे बताउं कि परमात्मा का कार्य गुप्त रूप में चल रहा है। मेरी सांसो में सिर्फ बाबा ही बाबा है। अब मेरे मन में एक ही संकल्प रहता है कि बाबा की प्रत्यक्षता कैसे करूं। कुछ वर्षों से एक बाबा की ऐसी फिल्म बनाने की इच्छा है जिससे कि जो भी कोई देखे तो उससे परमात्मा का साक्षात्कार हो जाये। क्योंकि यह समय पूरे सृष्टि चक्र का सबसे अमूल्य समय है। इसलिए यह भी संकल्प जरूर परमात्मा पूरा करेगा ऐसा मेरा पूरा विश्वास है।

सभी को सुनना चाहिए यह ज्ञान

ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के बाद पूरा जीवन सकारात्मक और खुशहाल हो गया। चाहे घर हो या कारोबार, चाहे समाज हो या व्यवसाय। हर जगह कार्य करने में एक अलग ही आनन्द आता है। मैं तो हर किसी को कहता हूँ कि इस संस्थान से जुड़कर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि इस राजयोग ध्यान से पूरा का पूरा जीवन बदल जाता है।

प्रेरणापुंज

दादी गुलजार (हृदयमोहिनी)
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

तीव्र पुरूषार्थी वह हैं जो सोचा और किया

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड । एक फैक्ट्री डायरेक्टर कितने हजार लोगों को कन्ट्रोल करता है, चलाता है वह भी तो अपनी जिम्मेवारियां निभाता है, अगर आप ज्ञानियों ने भी अपनी ड्यूटी अच्छी तरह से निभाई तो क्या बड़ी बात है! हमारे में और उन्हों में अन्तर क्या है? हम डबल काम करते हैं, हमारा आध्यात्मिक वायब्रेशन भी वायुमण्डल में फैलता है और दूसरा कर्म का भी बल मिलता है। हमारी नवीनता यह है क्योंकि हमको बाबा की मदद है, उन बिचारों को बाबा की मदद तो नहीं है। भले भक्तिमार्ग में थोड़ा बहुत सहयोग मिलता है लेकिन सभी भक्त भी तो नहीं हैं। फिर भी काम तो करते हैं, ड्यूटी तो सम्भालते हैं! आठ-आठ घण्टे तो क्या ओवरटाइम भी करते हैं। रात में भी करते हैं, वह क्या बड़ी बात हुई। यहां तो बाबा की गुप्त मदद से सभी कारोबार चल रही है, बाबा बुद्धिमानो की बुद्धि टच करके निमित्त बनाता है। है तो बाबा की कमाल। हम लोगों का तो बीच में पुण्य बनता है। लेकिन कराने वाला तो बाबा है न। मेहनत खुद करता है और फल हमको दे देता है। तो बाबा की हम सबको एक्सट्रा मदद है तो हमारा पुरूषार्थ भी एक्स्ट्रा होना चाहिए। साधारण नहीं होना चाहिए।

अभी वर्तमान समय के हिसाब से दुनिया खराब होती जा रही है, शहरों में देखो एक तो प्रदूषण इतना बढ़ रहा है। जो गवर्मेन्ट ही समझ नहीं सकती है कि दो चार साल के बाद क्या होगा? लेकिन हम तो समझते हैं कि क्या होगा? परिवर्तन होना है और क्या होना है। तो अचानक बाबा इसलिए दिखा रहे हैं कि सभी एवरेडी रहो, कभी भी कुछ हो सकता है। आपके स्वप्न में भी नहीं होगा लेकिन अचानक कुछ भी हो सकता है। इसलिए बाबा कहते हैं कि समय अनुसार आप एवरेडी रहो। किसकी भी डेट फिक्स नहीं है। ज्योतिषी लोग भले बताते हैं बाकी बाबा ने तो बताई नहीं है।

तो अभी आप लोग यह नहीं कहो कि हो जायेगा, करेंगे... जो कहते हैं कोशिश करेंगे, अटेंशन देंगे तो उसको अपने में ही संशय है। अपने में शक है तभी तो कहते कोशिश करेंगे। अगर मेरे को निश्चय है कि मुझे करना ही है तो कोशिश शब्द कहेंगे या करने लग जायेंगे! अगर आपके पास टाइम नहीं है, तो आपके मुख से जरूर निकलेगा कि हम पूरी कोशिश करेंगे। तो पुरूषार्थ में अभी 'करना ही है'। 'ही' शब्द को अण्डर लाइन करो। कुछ भी हो जाए लेकिन करना ही है। यह तीव्र पुरूषार्थी का संकल्प है। कई कहते हैं कि हम तो गुप्त हैं, हमको कौन पहचानता है। अरे बाबा पहचानता है, कोई नहीं पहचाने तो क्या हुआ! कई फिर कहते हमको कोई पहचानता नहीं इसलिए उसी अनुसार हमको कोई सीट भी नहीं मिलती है। अरे सीट तो आपकी पहले ही सतयुग में भी फिक्स हो गयी है, बाबा की दिल में भी है। पोजिशन यहाँ क्या लेनी। बड़ा बनना माना ओखली में मुँह डालना। बड़ा बनना कोई मासी का घर नहीं है। पोजिशन या सीट लेना कोई छोटी बात नहीं है। कई ऐसे समझते हैं कि महारथी तो मौज में रहते हैं। लेकिन उन्हों के सामने जो समस्यें आती हैं तो वह आपके आगे तो चींटी भी नहीं आती हैं। लेकिन वह बाहर से दिखाई नहीं देता है इसलिए कहते बड़ों को आराम मिलता, पोजीशन मिलता है।

क्रमशः....

परमात्मा का संदेश सब तक पहुंचाने की सेवा

बाबा को प्रत्यक्ष करना बड़ा सहज है, जितनी हमारी अंदर बाहर सफाई सच्चाई है। मिक्सचर नहीं है

■ शिव आमंत्रण

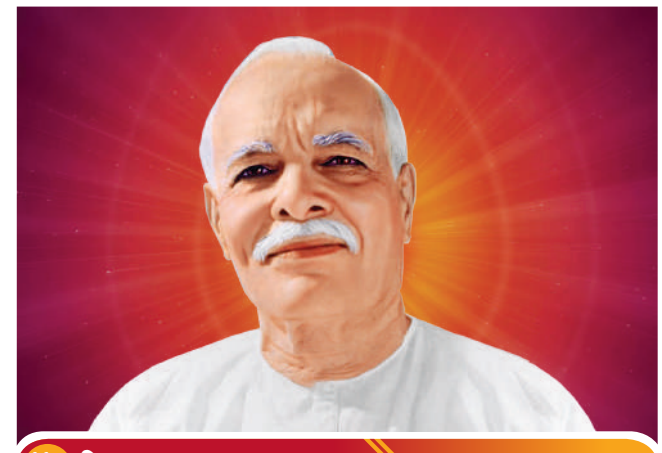

रियल लाइफ

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा
संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

गोप-गोपियों अथवा यज्ञ-वत्सों के मन रूपी मैदान में प्रेम और ज्ञान के बीच संग्राम चलता था।

आबू रोड । साथ ही बाबा यह भी कहा करते थे कि ''बच्ची, यह जो ज्ञान आपने प्राप्त किया है, यह बहुत ही अद्भुत और अनमोल है, यह प्रायः लुप्त हो चुका है। जब इस ज्ञान को आप दूसरों को सुनायेंगी तो वे बहुत ही खुश होंगे और प्रभु पर न्योछावर होंगे। बच्ची, इस ज्ञान से आप छोटी-छोटी कन्याएँ भी योग स्थित होकर बड़े-बड़े दिग्गज विद्वानों को भी मात दे सकेंगी और आज जो लोग स्वयं को ही शिव मान बैठे हैं अथवा आत्मा को ही परमात्मा समझ बैठे हैं, उन्हें आप प्रभु के आगे झुका सकेंगी। आप ही इस विश्व-ड्रामा में नर-नारियों को घोर अज्ञान-निद्रा से जगाने की निमित्त बनी हुई हैं। बच्ची, क्या आपके कानों में भक्तों की पुकार सुनाई नहीं दे रही? आप ज़रा एकांत में जाकर बैठो तो आपको मालूम होगा कि भक्त आपको पुकार रहे हैं कि ''हे जग-जननी, हे अम्बे, हे शक्ति माता, हम तुम्हारे लाल चिरकाल से तुम्हें पुकार रहे हैं! हे शीतला मईया, अब तो हमें शान्ति और शीतलता का मन्त्र दो। हे ज्वाला देवी, हे ज्योतियों वाली माँ, अब तो हमारी बुझी ज्ञान-ज्वाला को जगाओ, अब तो हमारे बुझे दीप को जलाकर हमारे अंधकार को मिटाओ! माँ, हम तुमको कब से पुकार रहे है और माया से हार मानकर तेरी जड़-यादगारों के द्वार पड़े हैं, हम नतमस्तक होकर, आत्म-निवेदन करते-करते थक-से गये है तथा परिक्रमा कर-करके निराश हुए बैठे हैं! बोलो माँ, अब तो अपने लालों को गिरने से थामकर, हाथ पकड़ कर उठा लो, अब तो हमारी पुकार सुन, हमारी बली स्वीकार करो!'' बाबा के इस प्रकार के वाक्यों से यज्ञ-वत्सों को ऐसा समझ में आता था कि अब यज्ञ-स्थल को छोड़कर गांव-गांव, नगर-नगर, गली-गली में प्रभु-भक्तों की सेवा करने जाना पड़ेगा।

प्रेम और ज्ञान में युद्ध ऐसा सोचकर यज्ञ-वत्सों को एक सेकण्ड के लिये यह संकल्प आता कि क्या हमें अपने प्यारे ब्रह्मा बाबा और शिव बाबा से बिछुड़ना पड़ेगा? हम तो ज्ञान-सागर शिव बाबा की ज्ञान-मुरली पर न्योछावर होकर यहां आई थीं। अरे, जिसके लिये हमने संसार को छोड़ा और दैहिक सम्बन्धियों से मुख मोड़ा और तन-जन के हर प्रकार के विघ्न सहे, अत्याचारों का सामना किया, स्वाद और स्वजनों से किनारा किया, क्या अब उस ज्ञान-मुरली को सम्मुख सुनने से हम वंचित रहेंगी और क्या उस अति प्यारे, आँखों के तारे, दिल के सहारे बाबा से हमें दिनों और महिनों दूर रहना पड़ेगा? नहीं, नहीं! यह हमें किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं है। दूसरे ही क्षण 'ज्ञान' उन्हें ईश्वरीय कर्त्तव्य की पहचान देकर कहता - अरी गोपियो, निःसन्देह तुम प्रभु-प्रेम में पली हो, तुमने उस प्रभु पर सब-कुछ न्योछावर किया है परन्तु तुमने उस प्रभु से, वृद्ध पिता-श्री के तन द्वारा इतनी अनमोल सेवा ली है, इतने वर्षों तक शिक्षा-प्रशिक्षा तथा लालन-पालन लिया है, तब क्या तुम उस प्रभु से अलौकिक सुख पाकर उसे स्वयं तक सीमित रखोगी? क्या तुम उस ज्ञान-सागर से ज्ञान का खज़ाना पाकर, दूसरों को उसमें से कुछ भी दान नहीं करोगी? प्रभु ने स्वयं को तुम वत्सों के आगे प्रत्यक्ष किया है, तब क्या तुम उस गुप्त प्रभु को जन-मन के आगे प्रख्यात नहीं करोगी? यदि तुम, जिन्होंने कि प्रभु को पाया है और उससे पवित्रता और अतीन्द्रिय सुख का वरदान लिया है, संसार के लोगों को ईश्वरीय संदेश नहीं दोगी! तो क्या स्वयं प्रभु, पिताश्री के वृद्ध शरीर में आकर गली-गली, नगर-नगर में सोये हुए लालों को जगाने जायेंगे?

क्रमशः..

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

स्वधर्म की स्मृति हमें सदा शांत स्वरूप बना देती है

कईयों के पास ज्ञान कितना भी हो लेकिन 5 मिनट भी स्थिर होकर नहीं बैठेंगे, 10 जगह बुद्धि जायेगी।

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड । शांतिधाम, निर्वाणधाम हमारा देश है। बाप के घर में सदा सुखी हैं। पराये घर में सदा ही खतरा है। स्वधर्म में टिकने से सदा सुख है, परधर्म दुःख देने वाला है। धर्म माना ही धारणा। हम सबका देश अपना है। स्वराज्य मिला है तो खुशी कितनी है। इतनी खुशी है स्वराज्य पाने से जैसे लगता है भविष्य में हमारा विश्व में राज्य होगा। अधीनता बड़ा दुःख देती है। किसके भी अधीन, प्रकृति के, धन के सम्बन्ध के अधीन, वस्तुओं के अधीन इसके बिगर कैसे चलेगा? नहीं। अगर स्वधर्म की स्मृति है, घर की याद है, बाबा का साथ है तो बलवान बन जाते हैं। स्वधर्म की स्मृति सदा शान्त स्वरूप बना देती है। मन में कोई हलचल नहीं। स्वधर्म शान्त है, शांति में शक्ति है। पाँच तत्वों से पार हमारा देश, उसमें रहो तो यहाँ से उपराम हो जायेंगे। ऊपर देखो तो दर्द पड़ जाए।

योग में आंख खुली होंगी तो सुस्ती नहीं आएगी, आत्म दृष्टि रहेगी। परमात्म प्यार को खींचेंगे। आँखें बंद होगी तो बुद्धि कहाँ भी चली जायेगी। तो आँखें खुली हों लेकिन किसी को भी नहीं देखो। आत्मा-अभिमानी स्वरूप में स्थित हों। निजी स्वरूप शान्त है, आनंद है, प्रेम है, ईश्वरीय सन्तान हूं, वह भी अन्दर से रस है। कोई के फेस पर ध्यान नहीं जाता। कर्मेन्द्रियाँ स्थिर शान्त हो जाती हैं। कईयों के पास ज्ञान कितना भी हो लेकिन 5 मिनट भी स्थिर होकर नहीं बैठेंगे। 10 जगह बुद्धि जायेगी। तो स्थिरता भी एक रायल्टी है। स्वधर्म में टिकने का नशा चढ़ता है। जब नशा मस्ती चढ़ती तो कहाँ भी झुकाव लगाव नहीं जाता। कितना भी कोई खूबसूरत हो या बदसूरत हो। लगाव बहुत बुरी बला है जो सारी प्रारब्ध खत्म कर देता है, पुरूषार्थहीन बना देता है फिर फालतू युद्ध करके टाइम गंवाते हैं। कहेंगे हमारे से नहीं होता है।

जहाँ लगाव होता है वहीं अच्छा लगता है और कोई अच्छे नहीं लगते। फिर सिद्ध करते है हम राइट हैं। यह आदत बहुत खराब है। सबसे ज्यादा खराब है जिद। जो मैं चाहूं वह होवे। ऐसे कई जिद के संस्कार वाले हैं, वह अपनी बात सिद्ध करेंगे जरूर, मैं राइट हूँ। भले हम राइट हूँ लेकिन हमें सिद्ध नहीं करना है। सिद्ध करने वाला राइट नहीं होता है।

कभी कोई काम हमसे राइट नहीं होता है तो उसको क्या कहें? आजकल के पुरूषार्थ में यह जरूर होना चाहिए, हमारे से कोई काम एक्यूरेट राइट न हो तो यह भी अलबेलापन है या योग की कमी है जो टाइम पर नहीं होता। जहाँ तुम पहुँचते हो, जैसी सभा हो, जैसा व्यक्ति हो वैसी प्वाइंट राइट टाइम पर निकले। पीछे बैठकर नहीं कहो यह होना चाहिए था। हमारी अन्दर से ऐसी तैयारी हो, हम ऐसी हो जो राइट टाइम पर सब एक्यूरेट हो।

हम औरों को कहते हैं सबकुछ सफल करों। कभी कुछ वेस्ट न जाये। अन्न का एक दाना भी वेस्ट न जाये। जैसा शुरू में बाबा ने ऐसा जादू लगा दिया जो सब इच्छायें खत्म कर दी। इच्छा क्या चीज होती है पता ही नहीं है। इच्छा मात्रम् अविद्या। इच्छा की जैसे समझ ही नहीं है। जिस चीज की आवश्यकता होगी वह आपेही सामने आयेगी। मुझे आवश्यकता है-यह शब्द पैदा हो नहीं सकता। आवश्यकतानुसार आपेही आयेगी। अपने को रॉयल रीयल योगी बनना है। बाबा जैसा चाहता है ऐसा अच्छा एक्जैम्पुल बनना है, जो दूसरों को प्रेरणा मिले। यह जैसे सहज योगी हैं वैसे भी मैं सहजयोगी रहूँ। जहाँ चाहिए शब्द है, वहाँ योग लगता ही नहीं है। फिर बुद्धि जायेगी मुझे यह चाहिए। जहाँ सन्तुष्टी नहीं है वहाँ योगी बन नहीं सकते।

क्रमशः...

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन गुरुग्राम, हरियाणा

शिव ज्ञान वह है, जो आपके पास है, लेकिन बुद्धि का अर्थ है उस ज्ञान का अपने जीवन में उचित इस्तेमाल करना

■ शिव आमंत्रण

अहंकार का शीश कटते ही बुद्धि का सिर निकल आता है।

आबू रोड । गणपति का मतलब है जो सभी गुणों के पति हैं। हमें सिर्फ उन गुणों की महिमा नहीं गानी है बल्कि बल्कि उन गुणों को धारण भी करना है तभी हम विघ्नविनाशक बन सकते हैं। गणेश जी के जन्म की कहानी से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। कहा जाता है कि जब शंकरजी दस साल की तपस्या पर गये तो पार्वती जी ने अपने शरीर के मैल से एक बच्चे को बनाया जो दस साल का था। पार्वती जी स्नान करने गयी तो उन्होंने बच्चे को दरवाजे पर बाहर खड़ा किया और कहा किसी को अन्दर आने मत देना। शंकर जी दस साल की तपस्या से वापस आए तो बच्चे ने उन्हें अन्दर आने नहीं दिया। कहा जाता है कि शंकर जी को इतना क्रोध आया कि उन्होंने उस बच्चे का सिर काट दिया। जब पार्वती जी बाहर आयीं तो उन्होंने कहा कि आप ने अपने ही बच्चे का सिर काट दिया। तब शंकर जी ने कहा कि अभी जो यहां से गुजरेगा, उसका सिर मैं इस बच्चे को लगा दुंगा। तभी वहां से हाथी गुजरा तो शंकर जी ने हाथी का सिर बच्चे को लगा दिया। फिर गणेश जी का यह रूप बना जिसकी हम पूजा करते हैं।

हमने कभी यह नहीं सोचा कि इस कथा का क्या अर्थ है। आज हम दस मिनट भी ध्यान कर लें तो बिल्कुल शांत अनुभव करने लगते हैं। और यहां हम कह रहे हैं शंकर जी दस साल की तपस्या के बाद आए और उनको छोटी सी बात पर इतना गुस्सा आ सकता है कि वह अपने ही बच्चे का सिर काट दिया? क्या ऐसा हो सकता है? किसी को इतना गुस्सा आ सकता है? जब हम ऐसा नहीं कर सकते तो दस साल की तपस्या से लौटे ईश्वर ऐसा कैसे कर सकते हैं? इतनी सी बात पर सिर काट दिया और फिर वही सिर क्यों नहीं लगाया? हाथी का सिर क्यों लगाया? अगर हमने इसका जवाब नहीं समझा, तो सिर्फ एक कथा की तरह ही सुनते रह जायेंगे। इसका कुछ अलग अर्थ भी हो सकता है, जो शायद हमने कभी सोचा ही नहीं है।

पार्वती एक देवी हैं। क्या किसी के शरीर से इतनी मिट्टी निकल सकती है कि एक बच्चा बन जाए? उसका अर्थ क्या है? शरीर की मिट्टी यानी अहंकार। अहंकार को हमेशा सिर में दिखाया जाता है। जब किसी व्यक्ति को अहंकार हो जाता है तो लोग कहते हैं कि इसका शरीर बहुत उंचा हो सकता है। जब हम परमात्मा को याद करते हैं, आध्यात्मिक ज्ञान का अध्ययन करते हैं तो सबसे पहला बदलाव जो हमारे शरीर अन्दर आता है कि हमारा अहंकार खत्म होने लगता है। यानी अहंकार का सिर कटने लगता है। वास्तव में इस शरीर का सिर नहीं है, बल्कि अहंकार का सिर है। जब अहंकार का सिर कटता है तो एक बहुत बुद्धि वाला सिर उस पर लगता है। इसलिए दिखाते हैं कि बच्चे का सिर काटा और हाथी का सिर लगा दिया। उसके एक-एक अंग में बुद्धि और ज्ञान है। ललाट को बहुत बड़ा दिखाते हैं। बड़ा यानी विशाल बुद्धि। जब हम परमात्मा के ज्ञान का अध्ययन करना शुरू करते हैं तो हमारे एक-एक विचार में ऊर्जा समा जाती है। तब हम सभी के कल्याण के लिए ही सोचते हैं। ज्ञान और बुद्धि में अन्तर यही है कि ज्ञान वह है, जो आपके पास है, लेकिन बुद्धि का अर्थ उस ज्ञान का अपने जीवन में उचित इस्तेमाल करना। तो ऐसी ही विशाल बुद्धि के कारण गणपति जी का सिर बड़ा दिखाते हैं। गणेश जी के कान बड़े-बड़े सूप की तरह दिखाए जाते हैं, जिसका मतलब है कि हमें अच्छी बातें ही अपने अन्दर लेनी हैं, बाकी कचरा निकाल देना है। कान बड़े हैं, इसका मतलब है कि सुनना ज्यादा है और बोलना कम, इसलिए मुंह छोटा दिखाया जाता हैं। सारे दिन में हम जो भी जानकारी सोशल मीडिया या किसी अन्य माध्यम से सुनते हैं तो वो हमारी सोच का हिस्सा बन जाता है। हमें ऐसी कोई बात नहीं सुनना चाहिए जिससे हमारे विचार अशुद्ध हो जाए।

अगर हमने कोई चीज नहीं करने का निर्णय लिया और हम उसे करने लगते हैं तो इसका अर्थ है कि हम अपनी इच्छा शक्ति को घटाते जा रहें हैं। फिर हम यही कहते हैं कि जो मैं करने का फैसला लेता हूं, उसे कर ही नहीं पाता हूं। अगर हम अपनी आत्मा का ताकत और इच्छा शक्ति बढ़ाना चाहते हैं तो हम किसी और की कमजोरी का चिंतन नहीं करेंगे और नहीं इस संबंध में किसी की बात सुनेंगे। यदि हम ऐसा नहीं कर पाते हैं तो वह कमजोरी सिर्फ उनकी नहीं रहती है बल्कि वह हमारी सोच का हिस्सा बन जाती है। आज हमें यह तय करना है कि हमें विघ्नविनाशक की सिर्फ पूजा ही नहीं करनी है, बल्कि खुद विघ्नविनाशक बनना है और गणपति के समान गुणों को अपने जीवन में धारण करना है। तभी हम सच्चे अर्थों में गणपति महोत्सव मना पाएंगे।

अलविदा डायबिटीज

बीके डॉ. श्रीमंत कुमार
ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू

डायबिटीज के दुष्प्रभाव

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड । लगभग एक शताब्दि पहले डायबिटिज के लिए दवाईयां ना के मात्र थी। इसलिए किसी को भी डायबिटीज होता था तो बहुत कम समय में ही वह अकाले मृत्यु का शिकार हो जाता था। परन्तु आज विज्ञान के खोज द्वारा अनेकानेक दवाईयां उपलब्ध है। इसलिए डायबिटीज से ग्रसीत सभी लोग प्रायः लम्बे समय तक जीवीत रह पा रहे हैं। किन्तु अगर डायबिटीज अगर नियंत्रण (Control) में नहीं है तो विभिन्न दुष्प्रभाव (complication) देखने में आ रहा है।

दुष्प्रभावों के प्रकार डायबिटीज जनित सभी दुष्प्रभावों (जोखिम) का हम मुख्यतः हम दो प्रकार से बांट सकते हैं-

1) Acute अर्थात् तुरन्त वा अचानक अर्थात् आकस्मिक दुष्प्रभाव।
2) Chronic अर्थात धीरे-धीरे पैदा होकर लम्बे समय तक रहने वाला दुष्प्रभाव।

ACUTE (आकस्मिक) प्रभाव भी मुख्यतः दो प्रकार के हैं -

1) Hypoglycemia अर्थात् रक्त में शुगर की मात्रा कम हो जाना (70 मिग्रा. से कम)
2) Hyperglycemia अर्थात रक्त में शुगर की मात्रा बहुत बढ़ जाना (200-300 मिग्रा. से भी ज्यादा) अब हम पहले देखेंगे रक्त में सुगर की मात्रा कम हो जाने से क्या-क्या होते हैं अर्थात् कैसे हमें पता चले कि हमारे Bloodsuger कम हो गया अर्थात् Hypoglycemia (Lowblood suger) हो गयाहै?

Hypoglycemia (Lowblood suger) के लक्षण:-

1) घबराहट होना।
2) हाथ पांव का कम्पन शुरू हो जाना।
3) आंखों के सामने अंधेरा छा जाना, धुधला दिखाई देना अथवा दो-दो दिखाई देना(Double vision)।
4) बहुत ही कमजोर महसूस करना, थकान अनुभव करना।
5) बहुत भूख लगना, खाने के लिए बेचैन हो जाना।
6) दिल का धड़कन तेज हो जाना।
7) पसीने में पूरा भिग जाना(बिना गर्मी के भी) कपड़े, बिस्तर सब भिग जाना।
8) समय, स्थान का सुध बुध भूलना, confuse हो जाना।
9) मिर्गिबात शुरू हो जाना (Convulsion)
10) बेहोश हो जाना अर्थात् अचेत हो जाना (Coma)

Hypoglycemia के कारण:

1) लम्बे समय तक भूखा रहना- डायबिटीज में जो भी दवाईयां दी जाती हैं, अधिकतर दवाईयों का असर लम्बे समय तक रहता है। इसलिए डायबिटीज से ग्रसीत व्यक्ति को हर चार घण्टे के अधिक कुछ न कुछ अवश्य ही खाना चाहिए (अगर वे दवाईयां ले रहे हैं तो) जब लम्बे समय तक भूखा रहते हैं तो शुगर की मात्रा रक्त में कम हो जाती है।
2) दवाई की मात्रा ज्यादा होने सेः- कभी-कभी मरीज स्वयं ही अपना इलाज स्वयं ही करते रहते हैं (डाक्टर के परामर्श के बीना) इसलिए जब Over dose मेडिसिन का सेवन करते हैं त से शुकर मात्रा बहुत ही कम हो जाती है और बेहोश भी हो जाते हैं। व्यस्क मरीजों की स्मृति शक्ति कम हो जाने के कारण दो बार दवाई सेवन कर लेते हैं फिर रक्त में शुगर की मात्रा कम हो जाती है।
3) **दवाई लेकर खाना भूल जाने सेवा खाने में बहुत देरी करने में** :- कभी-कभी कार्य की व्यस्तता के कारण अथवा विस्मृति के कारण यह हो जाता है।
4) Diarrhoea (दस्त लगना), Vomitina(उलटियां होना) से भी शुगर लो होने की सम्भावना रहती है।
5) उपवास (Fasting) करने से भी शुगर की मात्रा कम हो जाता है।
6) ज्यादा Exercise करने से भी शुगर की मात्रा लो हो जाती है।

Hipoglycemia निदान (Diagnosis) तथा निवारण (manegment) हम अगले लेख में वर्णन करेंगे।

क्रमशः...

संपर्कः बीके जगतजीत मो. 9413464808 पेटेंट रिलेशन ऑफिसर, ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू, जिला- सिरोही, राजस्थान

माइंड पॉवर YOUTH

राजयोग मेडिटेशन, मूल्य शिक्षा को जीवन में अपनाकर आज हजारों युवाओं के जीवन को नई दिशा मिली है...

डॉ. उमेश शर्मा
बदलपुरा, गुजरात

शिव की शक्ति से श्मशानी तंत्र से छुटकारा पाया

■ शिव आमंत्रण । जब मैं डॉ. संपूर्णानंद मेडिकल कॉलेज जोधपुर का एम.बी.बी.एस. अंतिम वर्ष का छात्र था। परीक्षाएं नजदीक थी। मेरे एक दोस्त ने धोखेबाजी से तांत्रिक द्वारा श्मशानी तंत्र की भभूत मुझे यह कह कर खिला दी कि यह हमारे देवता की भभूत है। उसे खाने के 5 मिनट के अंदर मेरा दिमाग सुन्न सा होने लगा। उस दिन किताब की एक लाइन को लेकर 5 घंटे बैठा पर पढ़ नहीं पा रहा था। पूरी परीक्षाएं इसी तरह अधूरी पढ़ाई करके दी। जैसे तैसे पास हुआ। तंत्र के प्रभाव से मुझे एक प्रकार का डिप्रेशन हो गया। साथ ही विचित्र प्रकार के ऐसे लक्षण आने लगे कि मुझे दूसरों के चेहरे कुरूप नजर आने लगे। डिप्रेशन की दवाई कुछ राहत देती लेकिन इस विचित्र लक्षण को डॉक्टर भी नहीं समझ पा रहे थे। मेरा परिवार धार्मिकता से और भक्ति के संस्कारों से ओतप्रोत है अतः कई धार्मिक अनुष्ठान करवा लिये।

शेष पेज 8 पर....

पंकज चौहान
मऊ, उत्तरप्रदेश

परमात्मा में संपूर्ण विश्वास हो तो सब संभव है

■ शिव आमंत्रण । मऊ, उप्र । सन 2010 में मैं ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आया। मेरा एमएससी फाइनल ईयर था। मेरे प्रोफेसर ने एक रिसर्च का टॉपिक दिया। उस रिसर्च को एक किताब का रूप देने के लिए टाइपिस्ट के पास गया, उसने दो हजार रूपए मांगे। मैंने सोचा क्यों न खुद टाइप करके पैसे बचा लिए जाएं। मेरे पास एक पुराना लैपटाप था जो खराब हो चुका था। मिस्त्री ने कहा कि ये तो कबाड़ा है। जितने का लैपटॉप नहीं है उससे ज्यादा खर्च हो जाएगा। वो लैपटॉप मैं खुद कई बार खोलने के बाद रिसेट करके देखा और उसके प्लक को बिजली से कनेक्ट करके छोड़ दिया कि हो सकता है कि यह चालू हो जाए लेकिन नहीं हुआ। एक दिन मेडिटेशन के दौरान अपनी बातें परमात्मा को बतायी। उसके बाद जब रूम में गया तो देखा कि लैपटॉप चालू था। उस समय मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। तब खुद अपना मैटर टाईप कर, कुछ ही दिनों में रिसर्च प्रोजेक्ट को एक किताब का रूप दे पाया। तब मैंने महसूस किया कि यदि परमात्मा में सम्पूर्ण निष्ठा, विश्वास और समर्पण हो तो सब संभव है।

संपादकीय

अज्ञानता का अंधेरा मिटाने की जरूरत

दीवाली भारतीय त्योहारों में एक अलग और उत्साह का पर्व है। लगता है कि हर घर में उमंग, उत्साह और जश्न का माहौल हो जाता है। लोग महीनों से ही इसके इंतजार में तैयारियों में जुट जाते हैं। क्योंकि दीपकों का पर्व होता है। लोग दीया जलाते है लक्ष्मी का आह्वान करते हैं। दीपावली के दिन अधिकतर देखा जाता है कि लोग घर के हर कोने-कोने में दीप जलाते है ताकि कहीं भी अंधेरा ना रहे। यह सच है एक ही दिन लेकिन प्रयास तो करते हैं। परन्तु समाज में तेजी से बढ़ता अज्ञान अंधकार को मिटाने की कोशिश कोई नहीं करता है। कई समाज सेवी, धार्मिक और आध्यात्मिक संस्थायें है जो करती है। लेकिन उसका रूट सही नहीं होने के कारण पूरा सफल नहीं हो पाता है। परमात्मा ने आकर इस सृष्टि पर अज्ञान अंधकार मिटाने का ही संदेश दिया था। जिससे लोगों में मानवता का दीप जले। सब लोग अपने लगे, कहीं भी किसी प्रकार का अज्ञान अंधकार ना रहे। आज जरूरत है कि हम भी मिट्टी के दीपकों के साथ प्रेम, आपसी भाईचारा, आनन्द, खुशी और अज्ञानता भगाने का दीप जलायें। इससे ही पूरा जग रोशन होगा। सारा जहान अपना होगा। यही इस दीपावली का संदेश है और जरूरत भी। यही नहीं साथ ही हमारे अन्तर्मन का अंधकार भी दूर होगा। जीवन खुशहाल होगा, प्रतिदिन सवेरा होगा।

मिट्टी के दीपकों के साथ प्रेम, आपसी भाईचारा, आनंद, खुशी और अज्ञानता भगाने का दीप जलाएं

बोध कथा | जीवन की सीख

विश्वासघात सबसे बड़ा छल

महाभारत युद्ध समाप्त होने पर धृतराष्ट्र ने श्रीकृष्ण से पूछा- मैं अंधा पैदा हुआ, सौ पुत्र मारे गए भगवन मैंने ऐसा कौन सा पाप किया, जिसकी सजा मिल रही है। श्रीकृष्ण ने बताना शुरू किया- पिछले जन्म में आप एक राजा थे। आपके राज्य में एक तपस्वी ब्राह्मण थे। उनके पास हंसों का एक जोड़ा था जिसके चार बच्चे थे। ब्राह्मण को तीर्थयात्रा पर जाना था लेकिन हंसों की चिंता में वह जा नहीं पा रहे थे। उसने अपनी चिंता एक साधु को बताई। साधु ने कहा- तीर्थ में हंसों को बाधक बताकर हंसों का अगला जन्म खराब क्यों करते हो। राजा प्रजापालक होता है। तुम और तुम्हारे हंस दोनों उसकी प्रजा हो। हंसों को राजा के संरक्षण में रखकर तीर्थ को जाओ। ब्राह्मण हंस और उसके बच्चे आपके पास रखकर तीर्थ को गए। आपको एक दिन मांस खाने की इच्छा हुई। आपने सोचा सभी जीवों का मांस खाया है पर हंस का मांस नहीं खाया। आपने हंस के दो बच्चे भूनकर खा लिए। आपको हंस के मांस का स्वाद लग गया। हंस के एक-एक कर सौ बच्चे हुए और आप सबको खाते गए। अंततः हंस का जोड़ा मर गया। कई साल बाद वह ब्राह्मण लौटा और हंसों के बारे में पूछा तो आपने कह दिया कि हंस बीमार होकर मर गए। आपने तीर्थयात्रा पर गए उस व्यक्ति के साथ विश्वासघात किया, जिसने आप पर अंधविश्वास किया था। आपने प्रजा की धरोहर में डाका डालकर राजधर्म भी नहीं निभाया। जिह्वा के लालच में पड़कर हंस के सौ बच्चे भूनकर खाने के पाप से आपके सौ पुत्र हुए जो लालच में पड़कर मारे गए। आप पर आंख मूंदकर भरोसा करने वाले से झूठ बोलने और राजधर्म का पालन नहीं करने के कारण आप अंधे और राजकाज में विफल व्यक्ति हो गए। सबसे बड़ा छल होता है विश्वासघात। आप उसी पाप का फल भोग रहे हैं..!

डॉ. अजय शुक्ला
बिहेवियर साइंटिस्ट, गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

जीवन का मनोविज्ञान भाग - 39

आध्यात्मिक जीवन का आत्म बल और दृढ़ता की शक्ति

शिव आमंत्रण, आबू रोड ▌ आत्म उत्थान के मार्ग पर गतिशील रहते हुए आत्मा का विकास करना महत्वपूर्ण पुरुषार्थ की उपलब्धि है जो आध्यात्मिक शक्ति से आत्मिक समृद्धि के रूप में प्राप्त होती है। जीवन की प्रक्रिया में सहनशीलता के साथ, समाने की शक्ति व्यक्तिगत व्यवहार को परिमार्जित करती है जिसके परिणाम स्वरुप आत्मबल और दृढता की शक्ति में बढ़ोतरी होने लगती है। आध्यात्मिक जीवन की व्यावहारिकता का यथार्थ जब मानवता वादी व्यवहार को उच्चता प्रदान करता है तब वह आत्म शक्ति से क्षमा प्रार्थना के समग्र स्वरुप को प्रकट कर देता है। श्रेष्ठ संकल्प से उपजती अंतः प्रेरणा मानस में श्रेष्ठ विकल्प को अपनाने के प्रति जिस श्रद्धा को जन्म देती है उसमें आस्था और मान्यता की विराट उपस्थिति सन्निहित रहती है। आध्यात्म के माध्यम से आत्मा का सम्पूर्ण विकास सुनिश्चित होता है जिसमें आत्मा की अलौकिक एवं पारलौकिक शक्तियां पुरुषार्थ करते हुए परमसत्ता से अनुभव की शक्ति प्राप्त करती हैं।

आत्मिक शक्ति की अनुभूति से प्रबल पुण्यः जीवन में पुण्य की पूंजी को प्रालब्ध द्वारा व्यक्ति प्राप्त करता है तथा आत्मिक शक्ति की अनुभूतियां पुण्य के योग को पुरुषार्थ की उच्चता में परिवर्तित कर देती हैं। आत्मा की शक्ति का अहसास जीवन को आत्मिक सम्पन्नता के क्षेत्र में स्थापित कर देता है जहां से मूल्यपरक संस्कारों के बीजारोपण को सुनिश्चित करना सहज हो जाता है। समर्पण का पुण्य कर्म उपराम स्थिति की उच्चता प्रदान करता है जिससे कर्मातीत अवस्था की प्राप्ति तथा अव्यक्त स्वरुप बनने की प्रक्रिया आत्मा को सम्पूर्णता तक पहुंचा देती है। आध्यात्मिक जीवन से प्राप्त आत्मबल दृढता की शक्ति में रूपांतरित होकर प्रबल पुरुषार्थ से पुण्य कर्म की व्यावहारिक स्थितियां निर्मित करता है जो आत्मिक समृद्धि का आधार होता है। महानता द्वारा श्रेष्ठ, शुभ एवं पवित्र कर्म का क्रियान्वयन प्रबल पुण्य को प्रतिपादित करता है जिसमें चेतना, चिंतन और पुण्य का समावेश आध्यात्मिक पुरुषार्थ से संपन्न होता है।

महान कार्य के संपन्न स्वरुप हेतु निष्ठाः मानव को स्वयं की आत्मिक शक्ति का अहसास उस समय होता है जब वह महान कार्य की सम्पन्नता को निष्ठा से निभाने के लिए आत्मा से समर्पित रहता है। सत्य दर्शन की स्थिति, जीवन दर्शन की व्यापकता से परिचित करा देती है जिसमें आत्म दर्शन की अवस्था का निर्माण, परमात्म दर्शन के स्वरुप को प्रकटकर देता है। स्वयं के उत्थान को पुरुषार्थ से परिष्कृत करना आत्म जगत को स्थायित्व प्रदान करता है जिसके व्यावहारिक पक्ष व्यक्ति को महानता की उच्चता तक पहुँचाने में मददगार होते हैं। आत्मबल का सिद्धांत जब दृढ़ता की शक्ति से व्यवहार में प्रकट होता है तब आध्यात्म की समग्रता आत्म विकास की गतिशीलता को आत्मिक समृद्धि द्वारा उच्चता का अनुभव करती है। व्यक्तिगत सत्ता का निष्ठापूर्ण स्वरुप महान कार्य की सम्पन्नता का जीवंत प्रमाण होता है जिसमें आत्मिक शक्ति की निर्णायक भूमिका आध्यात्मिक जीवन को सद्गुणों से सुसज्जित कर देती है।

आज्ञाकारिता की भावना में शक्ति की अनुभूतिः कल्याणकारी विचारगत उद्गम का नैसर्गिक प्रवाह सर्व मंगल स्वरुप में उद्घाटित होता है जिसमें भाव की पवित्रता का समावेश स्वतः ही रहता है जो आत्मा को शक्तिशाली बनाता है। आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता का भावनात्मक पक्ष सद्गुणों को मूल्यपरक सिद्धांतों से जोड़ता है जिसके अंतर्गत सन्मार्ग पर गतिशील होने का मर्म आचरण की अनिवार्यता को स्पष्ट करता है। जीवन में उच्चतम स्थिति की सुनिश्चित तलाश सचमुच व्यक्ति को महानता तक पहुँचाने में साधक बनती है जो आज्ञाकारिता के सन्दर्भ को पुण्य के सानिध्य में प्रासांगिक बना देता है। प्रेरणात्मक अनुभूतिओं का अनुसरण स्वयं को सक्षमता में परिवर्तित करता है जिसमें सफलता से उपलब्धि की प्राप्ति को सहज बनाने में शुभ भावना का आशीष सदा गतिमान रहता है। श्रेष्ठतम की ओर अग्रसर अंतर्मन साधक बनकर, साधना के साथ साध्य की पवित्रता के संबंधों को निभाते हुए जीवन दर्शन की गहराई से आत्म शक्ति की अनुभूति करता है।

जीवन में सरलता से आत्मबल का प्रयोगः सर्व शक्तिमान से आत्मा का सम्बन्ध आत्मिक समृद्धि का आधार है जिसमें सूक्ष्म पालना को दाता बनकर सम्पूर्ण विश्व की जिम्मेदारी एवं जवाबदेही से निष्पक्षतापूर्ण मदद वास्तविक पुरुषार्थ है।

व्यवहार की सरलता जीवन की पूर्णतः सुगन्धित कर देती है और आत्मशक्ति के सदुपयोग की संभावनाएं कई गुणा अभिवृद्धि प्राप्त करके आत्मिक परिष्कार का कारक बन जाती हैं। आत्मबल से सर्वप्रथम स्वयं की आत्म उन्नति के जीवंत प्रमाण सम्मानजनक स्थितियों के पोषक बनते हैं जो मानव उत्थान के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में अभिमुखित हो जाते हैं। परिवर्तन की प्रक्रिया में आध्यात्मिकता का योगदान स्वसे सर्व की ओर होता है जिसमें आत्मशक्ति सम्पूर्ण मनोबल के साथ आत्मिक उत्थान को आत्म संवर्धन हेतु सुनिश्चित करती है। प्रकृति के तत्त्वों को पावनबनाने की सेवा सर्वोच्च स्थिति का प्रतिफल है जो आत्मिक शक्ति की नैसर्गिक अनुभूति को परमसत्ता के सानिध्य से सम्पूर्ण स्वरुप में बिखेरती है।

आज हमें ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, जाति-पंथ के भेदभावों को समाप्त कर देना चाहिए।

सरदार वल्लभ भाई पटेल
पूर्व उपप्रधानमंत्री

प्रेरक विचार Spiritual THOUGHTS

सत्य को हजार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।

स्वामी विवेकानंद
आध्यात्मिक गुरु

मेरी कलम से

14 बार बम-गोली खाने के बाद भी भगवान ने कहा- 'जिंदगी का तमाशा देखकर आना'

मनिंदर सिंह बिट्टा
आतंकवाद विरोधी मोर्चा के अध्यक्ष

अच्छे कर्म किए तो सब आगे भी अच्छा होगा।

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड ▌ ये शरीर तो रबड़ का टुकड़ा ही है ना। मैं तो 14 बार गोलियां बम खाया हूं, जवान भी शहीद होते हैं। मेरा शरीर आधा बम और गोलियों से भरा हुआ है। लोहे के सहारे चलता हूं परंतु शुक्र भगवान का करता हूं कि उन्होंने बचा कर रखा है। भगवान ने कहा है कि जिंदगी का तमाशा देखकर आना। आज हैरान हूं कि इन्सान किस उल्टे राह तरफ़ जा रहा है? मैं ये बनूंगा, मैं वो बनूंगा। अगर भगवान ने लिख कर दिया है कि तुम दौड़ में भागो, तेरी उमर 200 साल है। तुम भागो जितना आगे जा सकते हो जाओ। अच्छे कर्म किए तो सब आगे भी अच्छा होगा। बुरे कर्म करोगे तो जैसे कीड़े-मकोड़े बरसातों में निकलते हैं तो पैरों के नीचे दब जाते हैं वैसे दब जाओगे। सवाल सबसे बड़ा ये है कि यह करोना काल में बहुत बड़ी महामारी आयी। हर घरों के दरवाज़े के ऊपर मौत खड़ी थी कोई नहीं बचा था दुनिया में। परंतु हमने सोचा शायद भगवान ने हमें यह समय विशेष समझाने के लिए ऐसा कुछ किया कि अभी भी संभल जाओ, कुदरत को देखो, किसी से दुश्मनी मत करो, किसी का दिल मत दुखाओ, सत्य रास्ते पर चलो। परंतु मैं हैरान हूं इस बात को लेके कि पूरी दुनिया में मौत खड़ी थी, श्मशान घाट सब भर चुके थे। मैंने अपनी जिंदगी में ऐसा कहर कभी नहीं देखा। मेरा ख्याल है कि ब्रह्माकुमारीज़ के आश्रम में हिंदुस्तान के राजनीतिक लोगों को यहां आकर ज्ञान लेनी चाहिए। यहां आकर जीवन को समझें कि आज नहीं तो कल ऊपर जाना है। मैं यह नहीं कहता कि सारे पॉलिटिशियन बुरे हैं, मैं भी मंत्री रहा हूं। मैं भी पावर में रहा हूँ। लेकिन आध्यात्म अच्छा लगता है। छोटा सा उदाहरण बताता हूं- 1992 में जब मेरे ऊपर बम ब्लास्ट हुआ तब पीजीआई चंडीगढ़ में भर्ती था। मेरी माताजी ने एक भजन लगायी।

पाप न करें बंदे, तेरे मिट्टी के घर सब ढह जाने हैं। उस गीत को समझने में मुझे डेढ़ महीना लग गया। क्योंकि मेरा धर्म के तरफ़ इतना ध्यान नहीं रहता था। मेरे पास पीएम साहब का फ़ोन आता रहता था हाल पूछने के लिए। मौत तो कई बार देख चुका हूं, अपनी जिंदगी को कभी समझा ही नहीं कि हम जिदां हैं, हम तो मर चुके हैं। जो आदमी बंदूक थामें बम गोली खाकर बमों से बन्दों को उड़ते देखा है उसे मौत से किस बात का डर और किस बात का अभिमान। हमें कर्मों की गति का रहस्य यहां ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम में दादी मां से प्रेरणा लेनी चाहिए।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की सामाजिक पहलः दो साल से राजयोग और आध्यात्म की शिक्षा जारी

शिवहर कारागार में बंदी होते हुए भी मन की स्वतंत्रता से जीना सीख गए

शिवहर जेल में कार्यक्रम के दौरान जेलर एवं उनके सहकर्मी के साथ ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सदस्य।

जेल में बना शांति का माहौल, बंदी जेल स्टाफ का भी करते हैं सहयोग

2020
से जारी है राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण

200-250
कैदी प्रतिदिन लगाते हैं राजयोग ध्यान

■ शिव आमंत्रण । शिवहर /बिहार। आज के समय में अपराधी मनोवृत्ति को प्रेम पूर्वक समझकर उसे नेक राह पर चलने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। क्योंकि अपराध का मूल कारण नकारात्मक मनोवृत्ति और नकारात्मक विचारधारा है। इस विचारधारा को समाप्त करने कि दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान अहम भूमिका अदा कर रही है। इस संस्थान के तहद मंडलकारा

में वर्ष 2020 से बंदियों के लिए राजयोग मेडिटेशन का अभियान चला कर एक अनोखी सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। कारागार में कैदियों को परमात्मा के प्रति ऐसी लगन लगा है कि वो अपनी अपराध वृत्ति और बदले का भाव जैसे प्रेम और करूणा में बदल लिया हो। उनके आचरण और संस्कार मानों कलयुग में दैवी पुरुषों का आगमन हो चुका है। उनकी दिनचर्या तो तपस्वी जैसी हो चुकी है। करीब 15-25 बंदी रोज सुबह 4 बजे से ब्रह्ममुहूर्त में परमात्मा के ध्यान में रम जाते हैं। जहां इन कैदियों के चेहरों पर पहले आत्मग्लानि और पश्चाताप के भाव रहते थे वहीं अब आत्म संतुष्टि और आत्म सम्मान साफ-साफ देखे जा सकते हैं।

ये बंदी कैद में होकर भी ऐसा लगता है कि ये लोग फरिश्तों की बस्ती में रह रहे हैं। जिस प्रकार ब्रह्माकुमारीज़ सेवा केंद्र पर आध्यात्मिक वातावरण रहता, उसी प्रकार जेल के अंदर भी खुशनुमा और सकारात्मक विचारों वाली एक टोली बस गयी हो। सेवाकेंद्र की तरह ही जेल के अंदर प्रदर्शनी पोस्टर, मेडिटेशन चित्र, अनमोल पुस्तकालय और प्रेरणादायी स्लोगन आदि जेल बैरक में दिखाई देती है जो बेहद ही अद्भुत है।

वहां कई कैदियों को जीवन परिवर्तन होता देख उनके साथी भी इस पावन पुनीत कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं ताकि अधिकतम अपराध की उत्पन्न स्थली जेल को जल्द से जल्द सकारात्मक वृति की उत्पन्न स्थली बनाया जाए तभी इस देश और दुनिया को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

कैदियों का जीवन बदलता देख बहुत खुशी होती है: बीके सुनीता

कैदियों को ईश्वरीय सौगात देते हुए बीके सुनीता बहन।

■ शिव आमंत्रण । शिवहर/बिहार। मैं बीके सुनीता बिहार राज्य के जिला शिवहर ग्राम कहतरवा सेवा केंद्र की संचालिका हूं। मैंने अलौकिक रक्षाबंधन त्यौहार 2020 से शिवहर जेल के कैदियों के बीच बहुत ही सुंदर ढंग से प्रोग्राम चित्र और प्रदर्शनी के द्वारा मनाई। ऐसे प्रोग्राम से कैदियों में बहुत बड़ा सुधार नजर आ रहा है। मैंने ओम की ध्वनि के साथ पांच विकार काम क्रोध लोभ मोह अहंकार छोड़ने के लिए मुक्ति की प्रतिज्ञा करा कर शिव बाबा के पर्चे दिए। वहां सभी आत्मा और परमात्मा के पर्चे पाकर ज्ञान योग का भी अभ्यास कर रहे हैं। कई कैदियों का कहना है कि दीदी जी आपको द्वारा बाबा ने मुझे नया जीवन दिया है संकल्प लिया कि जहां भी शिव बाबा के सेवा केंद्र होगा वहां जाकर ज्ञान योग मेडिटेशन करूंगा। दोबारा प्रोग्राम करने के लिए कैदी के पास जब हम दुबारा गए तो उनके जीवन में बड़ा बदलाव देखकर मुझे बहुत खुशी मिला। प्यारे बाबा मीठा बाबा शुक्रिया। मैं कभी नहीं सोची थी कि बाबा मेरे द्वारा इतनी बड़ी सेवा करायेगें। कई कैदी भाई सुबह और शाम मेडिटेशन कर रहे हैं शिव आमंत्रण पत्रिका लेकर पढ़ रहे हैं और कसम लिया है कि जीवन में दोबारा फिर कोई अपराध गलती नहीं करूंगा। जब सेवा केंद्र से पहली बार अलौकिक रक्षाबंधन में गए थे तो वे लोग बहुत अशांत थे। जब बाबा का परिचय मिला तो कैदी को उदासी मुस्कुराहट में बदल रही थी। मैं बाबा से कह रही थी यह सब आपका मीठा बच्चा है अब इन सब बच्चों को मदद करो मीठा बाबा तू दयालु और कृपालु है। आप तो पूरे विश्व के बदलने आए हैं बाबा ने सभी कैदी को जीवन बदल दिए उनका पदम गुणा शुक्रिया। मैं खुद को बहुत ही भाग्यवान आत्मा समझती हूं।

मेडिटेशन से कई अवसाद ग्रस्त बंदियों को चिंता से बाहर आने में मदद मिली: जेलर डॉ दीपक

■ शिव आमंत्रण । शिवहर/बिहार। बात रक्षाबंधन की है। त्यौहार पर छुट्टी ना मिल पाना कहीं ना कहीं मन को बेचैन करता है। ऐसी ही उलझन भरी बेचैनी में मैं अपने कार्यालय में बैठा था, तभी फोन पर एक नंबर से फोन आया। फोन रिसीव करने पर उधर से नारी का स्वर गुंजा और 'ओम शांति भाई जी' शब्द सुनकर ही मन को बड़ा आनंद महसूस हुआ। उन्होंने अपना परिचय ब्रह्मकुमारी बहन सुनीता के रूप में दिया और जेल में कैदियों को राखी बांधने के विषय में अपनी इच्छा जाहिर करते हुए मुझ से अनुमति मांगी तो मैंने सहज ही हां कर दिया। 2 दिन बाद सुनीता बहन का सुबह 8 बजे फिर से फोन आया और पूछा कि भाईजी आप फ्री हो तो हम लोग आज राखी बांधने आ जाएं, मैंने कहा आइए बहिन जी आप सभी का स्वागत है। इसके बाद सुबह 11 बजे सुनीता बहन के साथ बिरेंद्र और छोटी प्यारी सी बीके स्मिता बहन ने मेरे कार्यालय में प्रवेश किया। उनकी सादगी और सौम्यता देखते ही बनती थी। बहन सुनीता ने मुझ से राखी बांधना प्रारंभ कर बारी बारी से जेल में कार्यरत सभी कर्मियों को कलाई पर राखी बांधी और उन्हें खुद से तैयार की गई टोली खिलाई। बदले में, उन्होंने सबों से मन का विकार त्यागने का वचन लिया। फिर, उनका कार्यक्रम जेल में संसीमित बंदियों को राखी बांधने का था। अंदर पहुंचते ही कारा विद्यालय में उपस्थित सभी बंदीओं ने बहनों का स्वागत किया। मेरे यहां पदस्थापित होने से पूर्व भी बहन बीके सुनीता यहां कार्यक्रम करती आई थी, शायद या उनका बंदीओं से पुराना लगाव और परिचय था। फिर, उस दिन उन्होंने सभी बंदियों को बारी-बारी कलाई पर राखी बांधी उन्हें टोली खिलाई और आध्यात्मिक ज्ञान दिया। उन्होंने सभी बंदिओं से जीवन शैली में बदलाव करने का वचन लिया। बंदिओं ने सहर्ष अपनी बहन को अपने मन के पांच विकार यथा लोभ, मोह, काम, क्रोध एवं वासना को त्यागने का संकल्प कराया। कार्यक्रम लगभग 3 घंटे तक चला। इस बीच बहन सुनीता और भाई वीरेंद्र ने बंदियों को तरह-तरह की कहानियां सुनाते हुए और उद्धरण प्रस्तुत करते हुए सच्चाई के रास्ते पर चलने को प्रेरित किया।

अंत में, कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी बंदी बहन को छोड़ने कारा गेट तक आए। यह उनका प्रजापिता ब्रह्मकुमारी बहनों के प्रति प्रेम था।

कार्यक्रम के बाद बंदियों में कई सकारात्मक बदलाव देखने को मिले जैसे कई बंदी मेडिटेशन करने लगे और कई अवसाद ग्रस्त बंदियों को चिंता से बाहर आने में मदद मिली। उन्होंने जेल से छूटकर बाबा की सेवा करने और अच्छे मार्ग पर चलने का वचन दिया। बहन सुनीता से मिलकर मन खुश हो गया था और घर ना जाने की बेबसी से मैं बाहर निकल चुका था। शिवहर जिला में है रक्षाबंधन के अवसर पर एक बहन को पाना मैं ईश्वर की दैवीय अनुकंपा ही मानता हूं । उनसे मिलने के बाद मेरे जीवन में भी कई सकारात्मक बदलाव हुए हैं और यह बदलाव सोच के स्तर पर कहीं ज्यादा है। शायद मै इसके कारण बंदी कल्याण की दिशा में स्वयं को ज्यादा ऊर्जावान और उत्साहित महसूस कर रहा हूँ। इसके लिए बाबा का धन्यवाद और बहन सुनीता को भी कोटि-कोटि धन्यवाद।

मानसिक विकार ही अपराध का कारण

कैदियों को रक्षासूत्र बांधकर ईश्वरीय सौगात प्रदान करते हुए बीके सुनिता।

■ शिव आमंत्रण। शिवहर/बिहार। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय सेवा केंद्र कहतरवा की ओर से मंडल कारा शिवहर में अलौकिक रक्षा बंधन मनाया गया। इस मौके पर सेवा केंद्र की तरफ से बीके सुनीता, बीके स्मिता और भाई बीके बीरेंद्र कारा में पधारे थे। अलौकिक रक्षाबंधन कार्यक्रम की अध्यक्षता जेल अधीक्षक डॉ. दीपक कुमार ने की। बहन बीके सुनीता और बीके स्मिता ने सभी कारा कर्मियों और बंदियों की कलाई पर रक्षा सूत्र बाँधा। समस्त कार्यक्रम कारा विद्यालय में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में बंदियों को मानवीय विकारों को त्याग करने हेतु आवाहन किया गया। रक्षा सूत्र बांधकर बहन बीके सुनीता ने कैदियों को लोभ, मोह, काम, क्रोध और वासना के भाव का त्याग करने का संकल्प दिलाया। सभी कैदियों को निराकार ईश्वर दिव्य ज्योति के विषय में बताया और सद्गुणों को अपनाने हेतु प्रेरित किया। काराधीक्षक ने कहा कि ये पांचो मानवीय विकार ही समाज में अपराध का कारण है और इन्हें त्यागकर ही अपराध मुक्त समाज की स्थापना की जा सकती है। कारा विद्यालय में कैदियों को पढ़ते देखकर आगंतुक काफी प्रभावित हुए और कैदियों के बीच काफी उल्लास देखा गया। कैदियों ने ढोलक, तबला, हारमोनियम आदि की संगत लगाकर भजन गाये। इस अवसर पर प्रभारी उप अधीक्षक संजीव कुमार, कक्षपाल उदय सिंह, श्रवण कुमार आदि उपस्थित थे।

कोविड-19 के बाद का सुप्रशासन **चुनौतियां एवं संभावनाएं** विषय पर कार्यक्रम संपन्न

ब्रह्माकुमारीज़ के सहयोग से कोरोना पीड़ितों में उमंग-उत्साह का संचार

दीप प्रज्ज्वलित करते हुए बीके आशा एवम् अन्य अतिथिगण।

■ शिव आमंत्रण

भोपाल (मप्र)। कोविड-19 महामारी के दौरान अनेक लोगों की मृत्यु सिर्फ इसलिए हो गई की उन्हें उस समय मानसिक सहयोग नहीं मिल पाया। ब्रह्माकुमारीज़ के अनेक सेवाकेन्द्रों ने महामारी के उस दौर में न सिर्फ स्वयं कोरोना दिशानिर्देशों का पालन किया बल्कि सेवाकेन्द्र में रह रहे एवं सम्बंध संपर्क के लोगों को भी अन्य सहयोग के साथ मानसिक एवं भावनात्मक सहयोग दिया। सहयोग पाकर पीड़ितों में हिम्मत एवं उमंग उत्साह का संचार हुआ। उनके अंदर से नकारात्मक फीलिंग निकल कर सकारात्मक सोच जागृत हुई जिससे उनके अन्दर का भय खत्म हुआ

सुप्रशासन को लेकर मंथन में बीके आशा के विचार

और वे महामारी को हराने में सफल हुए। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ सहस्त्रबाहु नगर, राजयोग शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के प्रशासक प्रभाग द्वारा आयोजित कोविड-19 के बाद का सुप्रशासन, चुनौतियां एवं संभावनाएं विषय पर आयोजित कार्यक्रम में दिल्ली से पधारी प्रशासक प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा बीके आशा ने व्यक्त किए।

कार्यक्रम में राज्य आनंद संस्थान के मुख्य कार्यपालक अधिकारी अखिलेश अर्गल ने कहा कि हम थोड़ी देर के लिए खुश होते हैं, परन्तु उस खुशी को लंबे समय तक बरकरार नहीं रख पाते। हमारा उद्देश्य उस खुशी को लंबे समय तक महसूस करने की विधिया एवं माध्यम की पहचान कराना है। साथ ही उन्हें अपनाकर जीवन को खुशी से भरना है।

कार्यक्रम में हेमराज सूर्यवंशी, नेशनल हेड, मिनरल रिसोर्स असेसमेंट तथा विभागाध्यक्ष, मध्य क्षेत्र (मप्र एवं छ.ग.) जिओलाजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि कोरोना के बाद प्रशासन के तौर तरीके बदल गए हैं। ऐसे सुप्रशासन में चुनौतियां हैं। मूल्यों की धारणा से प्रशासन के कार्य को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। भोपाल जोन की क्षेत्रीय प्रभारी बीके अवधेश ने कहा कि सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में सुप्रशासन एवं मूल्यनिष्ठ प्रशासन की स्थापना करना ही ऐसे कार्यक्रमों का उद्देश्य हैं।

प्रशासक प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजिका बीके उर्मिला ने मेडिटेशन के महत्व को बताया एवं सभी को राजयोग की अनुभूति कराई। दिल्ली ओम शांति रिट्रीट सेंटर से पधारी बीके ख्याति ने सभी को वैल्यूज की एक्सर्साइज कराई। सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके डॉ. रीना ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम में बच्चों ने डांस की सुंदर प्रस्तुतियां दी।

उपमुख्यमंत्री ने किया सेवाकेंद्र का अवलोकन

डिप्टी सीएम तारकिशोर प्रसाद को ईश्वरीय उपहार भेंट करते हुए बीके रानी।

■ शिव आमंत्रण। **मुजफ्फरपुर, बिहार।** बिहार के डिप्टी सीएम तारकिशोर प्रसाद ने सुख-शांति भवन में ब्रह्माकुमारीज़ का जोनल हेड क्वार्टर मुजफ्फरपुर का दौरा किया। राजयोगिनी बीके रानी ने उन्हें शॉल, बुके भेंट किया और ईश्वरीय उपहार देकर सम्मानित किया । उनके साथ भारत भूषण, एचएल गुप्ता, बीके महेश, बीके मीना, बीके अरविंद, बीके फलक, बीके सीता और ब्राह्मण परिवार एवम् अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

इजी मेडिटेशन फॉर बिजी इंजीनियर्स

■ शिव आमंत्रण। **जबलपुर/मप्र।** कटंगा कॉलोनी सेवा केन्द्र द्वारा इंजिनीयर्स डे के अवसर पर पेजअप सॉफ्टवेयर सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड में कार्यरत आई टी इंजिनीयर्स के लिए व्याख्यान ईजी मेडिटेशन फॉर बीजी इंजिनीयर्स मे शामिल कम्पनी के डायरेक्टर अनूप राय, नेहा राय, बीके विनीता बहन, बीके पूजा बहन एवं अन्य इंजिनियर प्रतिभागी।

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी से बीके गंगाधर सम्मानित

■ शिव आमंत्रण। **गुड़गांव।** गुड़गाव के रैडिसन होटल में कॉमनवेल्थ वोकेशनल युनिवर्सिटी, किंग्डम ऑफ टोंगा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मालदीव के केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री डॉ. अब्दुल्ला रशीद ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय, माउंट आबू से प्रकाशित ओम् शान्ति मीडिया पत्रिका के मुख्य संपादक बीके गंगाधर को मीडिया एण्ड कम्युनिकेशन में 'डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी' से सम्मानित किया।

डा. आफ फिलॉसफी का खिताब स्वीकारते हुए बीके गंगाधर।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू से पिछले 23 साल से 'ओम् शान्ति मीडिया' पत्रिका प्रकाशित की जा रही है। जिसमें समाज के हर वर्ग जैसे कि युवा, महिला, मेडिकल तथा शिक्षा जगत में आध्यात्मिक मूल्यों द्वारा सशक्तिकरण किया जा रहा है। इस पत्रिका की मूल खूबी ये है कि ये सम्पूर्ण रूप से आध्यात्मिक, सामाजिक, एवं मूल्याधारित समाज के निर्माण के लिए समर्पित है।

सकारात्मक सोच संतुलित आहार और आध्यात्मिकता से दिल की बीमारी से बचाव संभव

मन-दिमाग शांत होने से कई बीमारियों से मुक्ति संभव

■ शिव आमंत्रण। **हिसार, हरियाणा।** वर्ल्ड हार्ट डे के अवसर पर हिसार सेवाकेंद्र के पीस पैलेस सभागार में 'नौजवानों को संतुलित आहार और आध्यात्मिकता के द्वारा दिल की बीमारी से बचाना' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विधायक डॉ. कमल गुप्ता व हिसार की उपायुक्त डॉ. प्रियंका सोनी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया।

मुख्य वक्ता के तौर पर होली हॉस्पिटल हिसार के डॉ. संदीप सूरी ने बताया कि हमारा खान-पान, दिनचर्या कैसी होनी चाहिए, हम कौन से व्यायाम करें, कौन सी बातों का ध्यान रखें और आवश्यकता पडने पर किस समय डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए यह हमें मालूम होना चाहिए।

इस अवसर पर हिसार के विधायक डॉ. कमल गुप्ता ने कहा, कि सबसे बड़ी बात यह है कि हमें अपने जीवन में व्यायाम के

साथ मेडिटेशन को अहम स्थान देना चाहिए। यदि हम मेडिटेशन करते हैं तो हमारा मन और दिमाग शांत होते हैं जिससे हमारे दिल पर सकारात्मक असर होता है।

जिला उपायुक्त हिसार डॉ. प्रिंयका सोनी ने बीके रमेश बहन का धन्यवाद करते हुए कहा, कि उन्होंने यहां मुझे आमंत्रित करके असीम शांति का अनुभव करवाया है।

कार्यक्रम में उपस्थित सीएमओ डॉ. रत्न भारती ने कहा, कि इस सेमिनार के द्वारा लोगों को मेडिटेशन के लिए जागरुक किया गया है जिससे उन्हें बहुत लाभ मिलेगा। अंत में बीके रमेश बहन ने सभी अतिथियों व गणमान्य श्रोताओं का धन्यवाद करते हुए अपील की कि सभी सकारात्मक सोच रखें और अपने को परमपिता परमात्मा की संतान समझें। सभी खुश रहें और खुशी बांटें।

डॉ. रामप्रकाश गिलोत्रा ने मंच का संचालन किया। कार्यक्रम में आईएमए प्रधान डॉ. जेपीएस नलवा, नीमा प्रधान डॉ. अशोक यादव, डॉ. सुनीता यादव, डॉ. प्रतिभा गुप्ता, डॉ. मोनिका बांगा, डॉ. रमेश जिंदल विशेष रूप से उपस्थित थे।

पेज 5 का शेष.....

शिव की शक्ति से श्मशानी तंत्र.....

लगभग 4 साल तक मैंने शिव साधना की। उससे चेहरे कुरूप दिखने वाली प्रक्रिया में थोड़ी सी राहत मिली परंतु जिंदगी की पटरी सामान्य नहीं हुई। इसी मध्य मेरी शादी हो गई थी तथा सरकारी नौकरी गुलाबपुरा भीलवाड़ा में लग चुकी थी। बीमारी के कारण पत्नी भी एक दो महीने में मायके चली गई। मेरी हालत थोड़ी सही हुई तो बड़ी मुश्किल से वापस आई। तनाव में बहुत अधिक सिगरेट पीने और गुटका खाने की लत लग गई। नींद व दिनचर्या अस्त व्यस्त रहती थी। एक दिन मेरे परिचित अपनी मां के इलाज के लिए मेरे यहां आए। उनकी मां ब्रह्माकुमारी सेवा केंद्र से जुड़ी है। उन्होंने मुझे वहां का पता दिया मैं सेवा केंद्र गया। 7 दिन का कोर्स किया परंतु कोर्स में मुझे कुछ नया अनुभव नहीं हुआ इसीलिए नियमित मुरली सुनने नहीं जाता। हां, जब ज्यादा चिंता होती तो मुरली पढ़ता मुझे मुरली में समाधान मिल जाता। आखिर मेरी जिंदगी का सुनहरा दिन आया। मेरी पत्नी व एक मित्र, सेवा केंद्र की संचालिका दीदी के साथ मधुबन पहुंचे। अगली रात को स्वप्न में देखा कि चार सफेद पोशाक धारी ब्रह्माकुमार मेरे शरीर से मेरी काली खाल की परत को खींच कर उतार रहे हैं तभी मेरी नींद खुल गई। मैं पसीने से भीगा हुआ था। धड़कन बढ़ी हुई थी। मैं योग लगाने बैठ गया योग में पहली बार शिव बाबा से बात हुई बाबा बोले मैंने तेरा तंत्र जो कि श्मशानी था श्मशान जाने के बाद ही छूटता है, उतार दिया है। उसके बाद मधुबन में हर कदम पर बाबा का अनुभव होने लगा। ब्रह्मा भोजन से तृप्ति होने लगी। क्षण भर के लिए भी घर व अस्पताल याद नहीं आया। मन में आनंद ही आनंद भरने लगा। एक अलौकिक संतुष्टि तथा अपार खुशी की अनुभूति हुई। धन्य है मेरा भाग्य जो मुझे स्वयं परमात्मा मिल गए और मुझे श्मशानी तंत्र से छुटकारा मिला। बाबा का कोटि-कोटि शुक्रिया।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. भारती पवार का किया सम्मान

केंद्रीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री डॉक्टर भारती पवार का सम्मान करते हुए नासिक की उपक्षेत्रीय प्रशासिका बीके वासंती। साथ में बीके पूनम एवम् डॉक्टर बीके दीपक हरके।

■ शिव आमंत्रण ▮ **नासिक, महाराष्ट्र** ▮ भारत सरकार के नवनियुक्त केंद्रीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री डॉक्टर भारती पवार को नासिक की उपक्षेत्रीय प्रशासिका बीके वासंती ने सम्मानित किया। भारत सरकार के नवनियुक्त केंद्रीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री डॉक्टर भारती पवार को नासिक की उपक्षेत्रीय प्रशासिका बीके वासंती ने टोली भेंट कर ईश्वरीय सौग़ात दी तथा माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया।

जशपुरनगर की बहनों ने किया कोरोना योद्धाओं का सम्मान

■ शिव आमंत्रण ▮ **जशपुर, छत्तीसगढ़** ▮ जशपुरनगर छत्तीसगढ़ ब्रह्माकुमारीज़ की तरफ से कोरोना योद्धा के सम्मान में एक कार्यक्रम का आयोजन रखा गया जिसमे सभी मेडिकल स्टॉफ, रोनियार क्लब, महिला शक्ति, सजल समूह, बाल विकास समूह, एरोबिक ग्रुप, पुलिस, जशपुरनगर विधायक विनय भगत, कलेक्टर महादेव कांवरे, एसपी विजयमानित केओ, एसपी विजयमानित शामिल थे। उनका सम्मान करते हुए बीके सरिता, बीके श्वेता, बीके अनुपमा एवम् बीके डॉ. सुथर।

बिहार के सिमराही बाजार सेवाकेंद्र पर स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित

नैतिक मूल्यों से होता है आंतरिक विकास

■ शिव आमंत्रण

सिमराही बाजार, बिहार ▮ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, सिमराही बाजार के तत्वाधान में स्थानीय ओम शांति केंद्र पर भव्य स्नेह मिलन समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन विधि पूर्वक राष्ट्रीय इस्पात निगम के उप महाप्रबंधक नरेश कुमार यादव, समाजसेवी रागिनी रानी, राजयोगिनी बीके रंजू, स्थानीय सेवा केंद्र प्रभारी बीके बबीता, समाजसेवी पप्पू यादव, बीके किशोर भाई इत्यादि ने संगठित रूप में पौधारोपण करके किया। अतिथियों को शब्दों द्वारा स्वागत एवं साल और पाग द्वारा बीके बबीता ने सम्मानित किया। बीके रंजू ने अपने उद्बोधन में कहा, कि एक आदर्श समाज में नैतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक मूल्य प्रचलित होते हैं। नैतिक मूल्यों का हमें सम्मान करना चाहिए। मूल्य शिक्षा द्वारा ही बेहतर जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। मूल्य शिक्षा ही जीवन को सशक्त, सकारात्मक और विकसित बना सकती है। उन्होंने कहा, कि जीवन में कार्यकुशलता, व्यवसायिक दक्षता, बौद्धिक विकास एवं विभिन्न विषयों के साथ आपसी स्नेह, सत्यता, पवित्रता, अहिंसा, करुणा, दया इत्यादि मानवीय मूल्यों के पाठ भी हम सभी को पढ़ना जरूरी है। क्योंकि वर्तमान के युवा कल के भावी समाज है। मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारण समाज में हिंसक वृत्ति बढ़ती जा रही है। विद्या या विमुक्ताए ही शिक्षा का मूल उद्देश्य है। शिक्षा लेने के बाद हम सभी को नकारात्मक से, व्यर्थ से, तनाव से, व्यसनों, विकारों से मुक्त होना है। ऐसी शिक्षा की आवश्यकता आज युवाओं को है। मूल्यों के ह्रास के कारण मानव संबंधों में तनाव, अविश्वास, अशांति, सामाजिक हिंसा बढ़ती जा रही है।

ईश्वरीय चर्चा के बाद सौगात देते हुए बीके रंजू व बीके बबीता ।

मेहसाना के गॉडली पैलेस में सोलार प्लांट स्थापित

सोलार प्लांट का उद्घाटन करते हुए बीके सरला एवम् अन्य बहनें।

■ शिव आमंत्रण ▮ **मेहसाना, गुजरात** ▮ महेसाना के गॉडली पेलेस में बीके सरला के कर कमलों द्वारा एवं अन्य बीके बहनों की उपस्थिति में 15 किलोवाट की बिजली पैदा करने वाले बैटरी बैकअप वाला सोलार प्लान्ट प्रस्थापित किया गया। इस प्लान्ट के द्वारा गोडली पेलेस में दिन-रात अविरत विद्युत प्रवाह चालू रहेगा। प्लान्ट प्रस्थापन की मुख्य जिम्मेवारी निभाने वाले ज्ञान सरोवर के सोलार विशेषज्ञ बीके हंसराज ने प्लान्ट के बारे में विशेष जानकारी देते हुए कहा, कि इस प्लान्ट में 30 सोलार पेनल लगाई गई है। जिसके द्वारा 15 किलोवाट बिजली पैदा की जायेगी। सोलार पेनल द्वारा उत्पादित डीसी पावर को एसी में तब्दील करने के लिए 10 एवं 5 किलोवाट के दो इन्वर्टर भी लगाए गये है। जिसके द्वारा गोडली पेलेस में अविरत बिजली चालू रहेगी। रात्रि को भी बिजली चालू रहे इसके लिए 450 एम्पीयर एवं 2 वोल्ट वाली 120 बैटरीयाँ भी प्रस्थापित की गई है। इसके साथ महेसाना के जेलरोड स्थित पीस पेलेस में भी 5 किलोवोट का बैटरी बैकअप वाला सोलार प्लान्ट प्रस्थापित किया गया है। इस मौके पर बीके सरला ने बताया, कि महेसाणा में ब्रह्माकुमारीज़ का यह सोलार प्लान्ट प्राकृतिक स्त्रोत के उत्तम उपयोग का श्रेष्ठ उदाहरण है।

पंचशील कौशल सेवा संस्थान के पुनर्वास केंद्र का हुआ शिलान्यास

कोरबा में पुनर्वास सेवा केंद्र का शिलान्यास करते हुए ब्रह्माकुमारी बहने।

■ शिव आमंत्रण ▮ **कोरबा** ▮ छत्तीसगढ़ के कोरबा में पंचशील कौशल सेवा संस्थान द्वारा स्व-परिवर्तन, नशा मुक्ति, काउंसलिंग एवं पुनर्वास केंद्र बनाने की अभूतपूर्व पहल की गई। परमात्मा द्वारा विश्व परिवर्तन के कार्य में निमित्त ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा इस केंद्र का शिलान्यास हुआ।

लोगों को व्यसन से मुक्त करने के लिए आयुर्वेदिक, पंचकर्म, नैचुरोपैथी, राजयोगा, सात्विक भोजन, एक्सरसाइज, काउंसलिंग, मोटिवेशन इन सभी के संमिश्रण से व्यसनमुक्त करने का प्रयास किया जाएगा। छत्तीसगढ़ प्रदेश में बढ़ते व्यसन के प्रचलन के कारण आज हर दूसरा घर किसी ना किसी तरह के व्यसन से प्रभावित हो रहा है। ना केवल शराब बल्कि गांजा, चरस, अफिम, सुलेशन, कफ सिरप, इंजेक्शन, कैप्सूल, गुटका, सिगरेट, बीडी, तम्बाकू इत्यादि विभिन्न तरह के नशीली पदार्थों ने समाज को जकड़कर रखा हुआ है। जिसकी वजह से गृह क्लेश की वजह बन रही है। वहीं व्यसन के लत की भरपाई करने के लिए व्यसनी तरह-तरह के क्राइम को अंजाम दे रहे हैं। जिससे उनका भविष्य जेल की सलाखों के पीछे गुजर रहा है। विगत एक दशक से विभिन्न तरह के व्यसन का प्रचलन छत्तीसगढ़ प्रदेश में चरम सीमा पर पहुंच चुका है। नशे की वजह से सड़क दुर्घटनाओं में छेड़खानी में महिला उत्पीड़न में इजाफा हुआ है। चोरी की वारदातें भी बढ़ी हैं। नशे की वजह से तलाक के मामले बढ़े हैं। नशे के चुंगल से बाहर निकालने के लिए एक नशामुक्ति केंद्र कामदगिरि उद्यान, ग्राम हरदीबाजार जिला कोरबा में खोला गया है। पंचशील कौशल सेवा संस्थान के प्रदेशाध्यक्ष नारायण केशरवानी ने बताया कि जिले में नशामुक्ति केंद्र की कमी बहुत काल से महसूस की जा रही थी।

भारतीयकरण से ही होगा मीडिया मूल्यनिष्ठः प्रो. संजय द्विवेदी

दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अतिथि एवम् उपस्थित श्रोतागण।

■ शिव आमंत्रण ▮ **नई दिल्ली** ▮ जब हम आध्यात्म से जुड़ते है तो स्वार्थ से दूर हो जाते हैं और ऐसी मूल्य आधारित जीवन शैली हमें मनुष्यता के करीब ले आती है। परन्तु विदेशी मीडिया से भारतीय मीडिया के उद्गम के कारण नकारात्मकता को भी मूल्य माना जा रहा है। अब मीडिया के भारतीयीकरण से ही इसमें सकारात्मक मूल्यों का समावेश होगा एवं मीडिया मूल्य निष्ठ होगा। यह बात भारत सरकार के सूचना व प्रसारण मंत्रालय की आईआईएमसी के महा निदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने मूल्य आधारित समाज के निर्माण में शिक्षकों व पत्रकारों की भूमिका विषय पर आयोजित एक सेमीनार में

शिक्षकों व पत्रकारों की भूमिका पर सेमिनार में व्यक्त विचार

मुख्य अतिथि के रूप में कही। यह सेमिनार संस्था के द्वारिका सेक्टर 11 स्थित राजयोग ध्यान केंद्र पर आयोजित किया गया था। न्यूज 24 चैनल की निदेशक अनुराधा प्रसाद ने विशिष्ठ अतिथि के रूप में कहा, कि मीडिया कम्युनिकेशन व संवाद ने ही सम्पूर्ण भारत को एकता की सूत्र में जोड़ रखा है। उन्होंने कहा, की आज समाज में सबसे ज्यादा जरुरत सकारात्मक संवाद की है, जो समाज में कम होता जा रहा है। उन्होंने कहा, कि मीडिया का रोल सही बात को सही रूप में परोसने के बजाए, उसके पक्ष या विपक्ष में खड़ा होता नजर आ रहा है। खास कर सोशल मीडिया में लाइक व डिस लाइक के आंकड़े के पीछे मीडिया मूल्यों में समझौता हो रहा है और मीडिया बाजारी मूल्यों के चपेट में आ गया है। ओम् शांति रिट्रीट सेंटर, गुरुग्राम की निदेशका बीके आशा ने अपने विडियो सन्देश में कहा कि टीचर की महिमा तो करते हैं, परन्तु क्या वे उनके मूल्यों को आगे लेकर जा रहे हैं? कुछ मूलभूत सिद्धांत जैसे की बदला न लो बदल कर दिखाओ, न दुःख दो न दुःख लो, सुख दो सुख लो।

रायपुर में **शिक्षक दिवस** पर राज्यपाल रमेश बैस के विचार

बच्चों को आध्यात्मिक मूल्य ही संस्कारित करेंगे

रमेश बैस जी
राज्यपाल, झारखण्ड

डॉ. प्रेम साय सिंह जी
स्कूली शिक्षा मंत्री, छ.ग. शासन

उमेश पटेल जी
उच्च शिक्षा मंत्री, छ.ग. शासन

एस. के. पाटिल
कुलपति, इन्दिरा गाँधी कृषि वि.वि

ब्रह्माकुमारी कमला दीदी
क्षेत्रीय निदेशिका, इन्दौर जोन

ब्रह्माकुमारी हेमलता दीदी
मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक, इन्दौर जोन

■ शिव आमंत्रण

रायपुर/छग. ॥ शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के शिक्षाविद सेवा प्रभाग द्वारा सोशल मीडिया यू-ट्यूब पर ऑनलाइन वेबीनार का आयोजन किया गया। जिसका विषय था-युवाओं को गढ़ने में शिक्षकों की भूमिका। चर्चा में भाग लेते हुए झारखण्ड के माननीय राज्यपाल रमेश बैस ने कहा कि कोई भी देश सोने, चांदी अथवा वहां पाए जाने वाले बहुमूल्य सम्पदा के आधार से महान नहीं बनता, वरन जिस देश के बच्चे महान होंगे, वह देश ही महान बनेगा। निश्चय ही बच्चे राष्ट्र की सम्पत्ति हैं और भावी भारत के कर्णधार हैं। आज बच्चों की नैतिक और चारित्रिक आधारशिला मजबूत बनाई जाए तो यही बच्चे भावी स्वर्णिम भारत के भविष्य को साकार कर सकते हैं। वर्तमान शिक्षा में आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को शामिल कर बच्चों को अच्छी तरह सुसंस्कारित करने की जरूरत है। छत्तीसगढ़ के स्कूली शिक्षा मंत्री डॉ. प्रेम सहाय सिंह ने कहा कि विद्यार्थी जीवन कच्ची मिट्टी की तरह होता है, उसे हम जैसा आकार देना चाहे वह दे सकते हैं। इसीलिए विद्यार्थियों को बचपन से नैतिक शिक्षा देने की जरूरत है। नैतिक शिक्षा देने का अभिप्राय है कि उनका चारित्रिक विकास हो। खुशी की बात यह है कि ब्रह्माकुमारी संस्था बच्चों को नैतिक शिक्षा देकर चरित्रवान बना रही है। उच्च शिक्षा मंत्री उमेश पटेल ने शिक्षक दिवस की बधाई देते हुए कहा कि माता-पिता के बाद सबसे अधिक पूजनीय शिक्षक होता है, उनका रोल माडल रहे हैं। उनके व्यक्तिगत चरित्र निर्माण में शिक्षकों का बहुत योगदान रहा है। इन्दौर से बीके हेमलता ने कहा कि वर्तमान शिक्षा किसी को अच्छा डॉक्टर, इन्जीनियर बना सकती है किन्तु वह उसे अच्छा इन्सान नहीं बना सकती। आध्यात्मिकता के अभाव में उसके पास निर्णय शक्ति, परखने की शक्ति, आत्मनियंत्रण की शक्ति और नैतिकता की शक्ति नहीं है। वह सहनशीलता, दिव्यता, मधुरता और करूणा, दया आदि दिव्य गुणों से भी वंचित है जो राजयोग से सम्भव है। इन्दिरा गांधी कृषि वि.वि. के कुलपति डॉ. एस.के.पाटिल ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। ईश्वर से पहले गुरू को प्रणाम करने की परम्परा हमारे देश में रही है। कदम कदम पर बच्चे को मार्गदर्शन की जरूरत होती है। उसका सही मार्गदर्शन करना गुरू का काम है। शिक्षा मनुष्य को परिपूर्ण बनाती है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि असली शिक्षा वही है जो मनुष्य की बुद्धि का विकास करे, उसके चरित्र का निर्माण करे और उसे अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाए। क्षेत्रीय निदेशिका एवं शान्ति सरोवर रिट्रीट सेन्टर रायपुर की संचालिका बीके कमला ने कहा कि यदि बच्चों को मां की गोद से ही नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा दी जाए तो अच्छे इन्सान समाज को मिलेंगे। आध्यात्मिकता हमारे जीवन को नैतिक मूल्यों से संवारने में मदद करती है।

राजयोग मेडिटेशन इसमें बहुत अधिक मददगार सिद्ध हो सकती है। सदुणों की प्राप्ति आध्यात्म से ही सम्भव है। इस अवसर पर रायपुर के गायक स्वप्निल कुशतर्पण तथा कु. शारदा नाथ ने प्रेरणादायक सुन्दर गीत प्रस्तुत किया। साथ ही कु. आयुषी और कु. परिणीता द्वारा मनोरंजक नृत्य मनभावन प्रस्तुत किया गया। संचालन बीके स्नेहमयी ने किया।

बीके राज सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट से सम्मानित

बीके राज को सर्टिफिकेट प्रदान करते हुए अतिथि।

■ शिव आमंत्रण ॥ **काठमांडू नेपाल**॥ नेपाल की संचालिका बीके राज को 'वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' लंदन द्वारा लॉकडाउन में कोरोना महामारी के चलते मानवता के लिए लोक कल्याण में अपना अमूल्य योगदान देने के कार्य के लिए 'सर्टिफिकेट ऑफ कमिटमेंट' से सम्मानित किया गया।

बाल कलाकारों द्वारा श्री कृष्ण लीला

बीके निर्मला और अन्य अतिथिगण द्वीप प्रज्वलन करते हुए।

शिव आमंत्रण ॥ **ढिगावा मंडी/हरियाणा** ॥ बहल सेवाकेंद्र की बीके शकुन्तला, बीके प्रेरणा व उनके सान्निध्य में ढिगावा मंडी सेवाकेंद्र पर बाल कलाकारों द्वारा श्री कृष्ण लीला नामक एक सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया। उसमें बाल कलाकार कु यशिका को सम्मानित करते हुए सेवानिवृत्त खण्ड शिक्षा अधिकारी कर्ण सिंह गोठड़ा एवं बीके शकुन्तला। साथ में अग्रसेन भवन के प्रधान एवम् पूर्व सरपंच नरेश गर्ग, नेशनल अवॉर्डी जोगेंद्र सांगवान, बीके निर्मला एवम् बीके पूनम ।

स्वच्छ रेल, स्वच्छ भारत अभियान...

■ शिव आमंत्रण ॥ **दानापुर/बिहार**॥ स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत दानापुर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा स्टेशन परिसर में स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम रखा गया, जिसमें ब्रह्माकुमारीज़ और दानापुर रेलवे की ओर से लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने और अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखने के लिए बताया गया और साथ ही साथ बीके शशि के द्वारा स्वच्छता के प्रति प्रतिज्ञा भी कराया गया। इस कार्यक्रम में दानापुर रेलवे के सीनियर डिविजनल इंजीनियर एसपी श्रीवास्तव ने ब्रह्माकुमारीज़ का धन्यवाद किया।

परमात्मा परम शिक्षक के रूप में दे रहे हैं आध्यात्मिक ज्ञान:बीके निर्मला

परमात्मा ही परम शिक्षक हैं अर्थात् शिक्षकों के भी शिक्षक हैं

बीके निर्मला और अन्य अतिथि गण द्विप प्रज्वलन करते हुए।

■ शिव आमंत्रण ॥ **रांची/झारखंड** ॥ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के स्थानीय सेवाकेन्द्र में शिक्षक दिवस मनाया गया। जिला उपाध्यक्ष एवं कांग्रेस पार्टी प्रवक्ता मुकेश यादव ने कहा, प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस मनाया जाता है। शिक्षक अनेक विद्यार्थियों के जीवन को शिक्षा द्वारा श्रेष्ठ, महान बनाकर इस दुनिया में जीवन जीने की कला सिखाते है। कार्यक्रम में उपस्थित सांडी, रामगढ़ के इंटरनेशनल पब्लिक एण्ड प्ले स्कूल के प्राचार्य गया प्रसाद राय ने कहा जीवन एक कला है और सुख से जीना तथा दूसरों को सुख देना ही दैवी जीवन शैली है। जिसके लिए विशेष कौशल की आवश्यकता है। ब्रह्मचर्य, शांति और सन्तोष के सिंहद्वार से प्रवेश कर योगाभ्यास द्वारा ही हम अपने जीवन को सुखमय तथा स्वर्गमय बना सकते हैं। केन्द्र संचालिका बीके निर्मला ने अपने संदेश में कहा कि त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव, त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव श्लोक में परमात्मा पिता को माता, पिता, बन्धु, सखा के साथ-साथ विद्या भी माना गया है। भगवान ही विद्या है। इसका अर्थ यही हुआ कि उनको जानना ही विद्या है और वो जो सिखाते हैं वही विद्या है। अतः परमात्मा ही परम शिक्षक हैं अर्थात् शिक्षकों के भी शिक्षक हैं। बीके निर्मला ने कहा कि एक शिक्षक भी उस परमात्मा को ही याद करता है। भारत के हर विद्यालय में प्रतिदिन की पढ़ाई का प्रारम्भ परमात्मा पिता के प्रति प्रार्थना से होता है जिसमें उनके गुणों और कर्त्तव्यों की महिमा होती है। लौकिक शिक्षक द्वारा पढ़ाई प्रारम्भ होने से पहले परमशिक्षक से वरदान, बुद्धि, शक्ति लेना अनिवार्य है। वर्तमान युग ज्ञान के विस्फोट का युग है। विभिन्न माध्यमों एवं शैक्षिक संस्थाओं के द्वारा प्रतिदिन अथाह ज्ञान परोसा जा रहा है फिर भी हम ज्ञान के प्यासे हैं और भगवान को कहते हैं नयन हीन को राह दिखाओ प्रभु। तमसो मा ज्योतिर्गमय, ज्ञान बिना गति नहीं आदि आदि। अब प्रश्न है कि कौन से ज्ञान बिना गति नहीं। वह है आत्मज्ञान, परमात्मज्ञान, सृष्टि के आदि मध्य अंत का ज्ञान, कर्मगति का ज्ञान। इसी ज्ञान की मांग हम परमात्मा से करते हैं और इसीलिए वो परमशिक्षक है। मानव से देव बनाने की पढाई परमशिक्षक ही कराते है। समय के साथ शिक्षा का स्वरूप भी बदल गया है। शिक्षा जब चरित्र निर्माण करना छोड़ दे, आंतरिक बल को जगाना छोड़ दे तो यह शिक्षा की ग्लानि है। जब शिक्षा की ऐसी ग्लानि हो जाती है तभी परमात्मा को परमशिक्षक के रूप में पार्ट बजाने आना पड़ता है। अभी वही समय चल रहा है जब स्वयं परमात्मा परम शिक्षक के रूप में आध्यात्मिकता द्वारा राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। सहज राजयोग का अभ्यास हमें आनन्द की अनुभूति के साथ-साथ अपने जीवन को सोलह कला सम्पूर्ण बनाने में भी सहायक होता है। इस अवसर पर माया टुंगरी मन्दिर के मुख्य पुरोहित अनिल मिश्रा, इन्टरनेशनल पब्लिक और प्ले स्कूल के प्रिन्सपल गया प्रसाद राय, कांग्रेस पार्टी के डिस्ट्रिक्ट वाइस प्रेसीडेन्ट और स्पीकर मुकेश यादव एवम् बीके निर्मला उपस्थित थे।

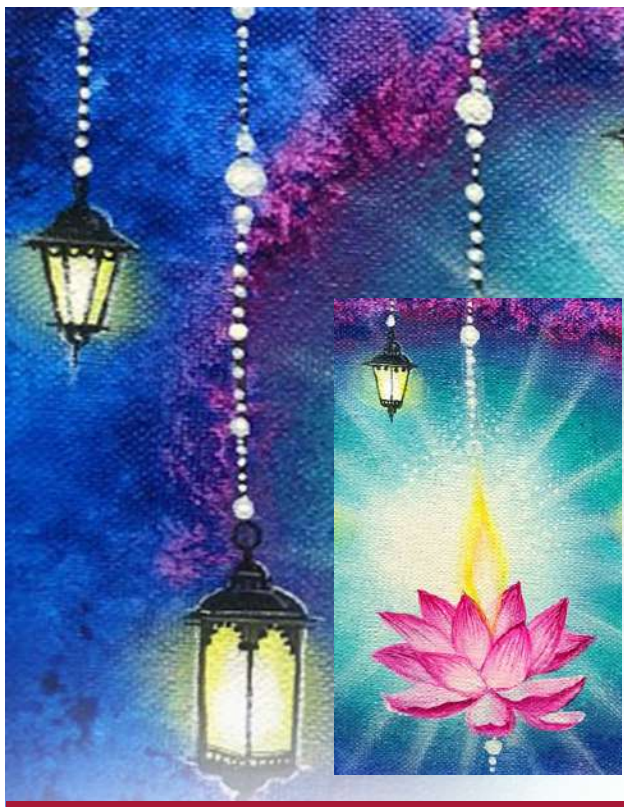

दीपावली का रहस्य

अब परमपिता परमात्मा शिव आकर हम सभी को दीपावली का सच्चा-सच्चा रहस्य समझाते हैं कि हे वत्सो! तुम द्वापर से लेकर हर वर्ष दीपावली मनाते आए हो।

■ **शिव आमंत्रण** । दीपावली का त्योहार भारतवर्ष में बहुत ही महत्वपूर्ण त्योहार माना जाता है। इसे हम सभी भारतवासी हर वर्ष बड़ी ही धूमधाम से मनाते आये हैं। लेकिन हर वर्ष त्योहार मनाते हुए भी हम जिस बात की कामना रखते हैं कि हमारे घरों में लक्ष्मी आयेगी, इसलिए हम लोग अपने घरों की सफाई करते, दीपक जलाते तथा पूजन कर लक्ष्मी का आह्वान करते हैं परन्तु इतना नहीं समझते कि एक तरफ़ तो लक्ष्मी का वाहन उल्लू को दिखाते हैं और दूसरी तरफ़ दीपक जलाकर लक्ष्मी का आह्वान करते हैं परन्तु विचार करने की बात है कि जब उल्लू को रोशनी में कुछ दिखाई ही नहीं देता तो लक्ष्मी आयेगी कैसे? वह तो हमसे दूर भाग जायेगी। अब परमपिता परमात्मा शिव आकर हम सभी को दीपावली का सच्चा-सच्चा रहस्य समझाते हैं कि हे वत्सो! तुम द्वापर से लेकर हर वर्ष दीपावली मनाते आये हो। लेकिन बजाय सम्पन्न होने के और ही कंगाल होते आये हो। अतः परमपिता परमात्मा शिव अब कहते हैं कि बच्चों, घरों की सफ़ाई करना या दीपक आदि जलाना तो साधारण-सी बात है। परन्तु परमपिता परमात्मा शिव कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के बीच के वर्तमान कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगम युग पर दीपावली का वास्तविक रहस्य समझाते हैं कि यदि वास्तविक लक्ष्मी को बुलाना चाहते हो या श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के राज्य की स्थापना करना चाहते हो तो तुम्हें लक्ष्मी के समान दैवी गुण अपने जीवन में धारण करने होंगे। इसी के लिए परमपिता परमात्मा हमें समझाते हैं कि हे वत्सो, तुम्हारी आत्मा में 63 जन्मों से 5 विकारों रूपी मैल चढ़ा हुआ है। जब तक तुम बच्चे अपने आत्मा रूपी घरों से इन 5 विकारों रूपी मैल को नहीं निकालते अर्थात् जब तक आत्मा को ज्ञान प्रकाश नहीं मिलता तब तक श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का राज्य स्थापन नहीं हो सकाता और सही अर्थों में दीपावली नहीं हो सकती है।

सच्ची दीपावली

कार्तिक की अमावस्या को भारतवर्ष के घर-घर में प्रकाश दीप जगमगा उठते हैं और बाल-वृद्ध आनंद से भर जाते हैं। सभी अपने-अपने घरों की तथा कपड़ों की सफाई करते हैं। व्यापारी वर्ग इस शुभ दिवस पर पुराने खाते को बन्द कर नया खाता खोलते हैं। मान्यता है कि धन की देवी श्री लक्ष्मी इस रात्रि में भ्रमण करती हैं और अलौकिक गृहों को धन-धान्य से परिपूर्ण कर देती हैं। अपने भाग्य की परीक्षा लेने के लिए लोग जुआ भी खेलते हैं। रात्रि के अन्तिम प्रहर में माताएं सूप की कर्कश ध्वनि से दरिद्रता को निकालती हैं तथा गांव के बाहर सामूहिक रूप से उसे जला देती हैं।

क्या आपने कभी विचार किया है कि श्री लक्ष्मी के स्वागत के लिए प्रति वर्ष दीपमाला जला कर भी भारतवर्ष क्यों दरिद्र हो गया है? जगमगाते दीपों को देखकर भी श्री लक्ष्मी क्यों हमसे रूठ गयी हैं? जलते हुए दीप जनका आकृष्ट क्यों नहीं कर पाते? वे कौन-सा दीप जलाना चाहती हैं? वस्तुतः आत्मा ही सच्चा दीपक है। विकारों के वशीभूत हो जाने के कारण आत्मा का प्रकाश आज मलिन हो गया है। मनुष्य की अन्तरात्मा तमसाच्छन्न है। ऐसे विकारी मनष्यों के बीच श्री लक्ष्मी का शुभागमन कैसे हो सकता है? लेकिन कितनी विडम्बना है कि आत्म दीप प्रज्वलित कर कमल पुष्प सदृश अनासक्त बन कमलासीन श्री लक्ष्मी का आह्वान करने जगह हम मिट्टी के दीप जला कर बच्चों का खेल खेलते रहते हैं। मन-मन्दिर की सफाई करने की जगह बाह्य सफ़ाई से ही हम खुश हो जाते हैं। तभी तो श्री लक्ष्मी हमसे रूठ गयी हैं। कमल सदृश बन कर हम कमला को प्राप्त कर सकते हैं।

अमावस्या की काली रात्रि की तरह आज चतुर्दिक घोर अज्ञान अन्धकार छाया हुआ है। कहीं कुछ सूझ नहीं रहा है। मत मतान्तर के जाल में मानव मात्र भ्रमित है। सभी आत्माओं की ज्योति बुझ चुकी है। ऐसे समय में सदा जागती ज्योति निराकार परमपिता परमात्मा शिव सर्वात्माओं की ज्योति जगाने के लिए कल्प पूर्व की भांति इस धराधाम पर अवतरित हो चुके हैं और प्रायः लोप गीता ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। निर्विकारी बन उस सदा जागती ज्योति से अपनी आत्मा का दीपक जगा कर ही हम सच्ची दीपावली मना सकते हैं। तब ही इस देवभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुर्नस्थापना होगी जहां रत्न जड़ित स्वर्ण महल होंगे और घी-दूध की नदियां बहेंगी। इस युगान्तरकारी घटना की पावन स्मृति में ही हम दीपावली का त्योहार मनाते हैं। इस अवसर पर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक एक बड़ा दीप जलाया जाता है और उसी से अन्य दीपकों की ज्योति जलाई जाती है। अन्य किसी देवता के मन्दिर में सदा दीप नहीं जलता है लेकिन आज भी भगवान विश्वनाथ के मन्दिर में अनवरत दीप जलता रहता है क्योंकि एक मात्र निराकार परमात्मा शिव ही सदा जागती ज्योति हैं।

निराकार परमपिता परमात्मा शिव के साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा प्राप्त कर जब हम निर्विकारी बनते हैं तो हमारा एक नया जन्म 'मरजीवा जन्म होता है। हमारे पुराने आसुरी स्वभाव संस्कार और संबंध समाप्त हो जाते हैं तथा नये दैवी स्वभाव, संस्कार और संबंध बनते हैं। इसी की स्मृति में व्यापारी इस दिन पुराने खाते को बंद कर नया खाता खोलते हैं। औघड़दानी, भोलानाथ भगवान शिव के साथ व्यापार करने वाले आध्यात्मिक साधकों का परम कर्त्तव्य है कि अब वे आसुरी अवगुणों का खाता बंद कर दैवी गुणों के लेन-देन का खाता खोलें जिससे आगामी सतयुगी सृष्टि में वे श्री लक्ष्मी का वरण कर सकें।

दीपावली के दिन जुआ खेलने का बहुत महत्त्व है। कहते हैं कि जो इस दिन जुआ नहीं खेलता है उसकी अधम-गति होती है। इसका भी गंभीर आध्यात्मिक रहस्य है। जुए में कुछ सम्पत्ति हम दांव पर लगाते हैं जो कई गुना होकर हमें मिलती है। पावन सतोप्रधान सतयुगी सृष्टि की स्थापनार्थ जब पतित पावन परमात्मा शिव इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं तो वे हम जीवात्माओं को आदेश देते हैं कि अपने कौड़ी तुल्य तन-मन-धन को ईश्वरीय सेवा में लगा दो तो 21 जन्मों के लिए तुमको कंचन काया, सतोप्रधान मन और अखुट धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। धन्य हैं वे नर-नारी जो इस कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर ऐसा ईश्वरीय जुआ खलते हैं। बाकी तो सभी 'विषय-सागर' में गोता खाने वाले अधम और पशु-तुल्य हैं।

दीपावली के आध्यात्मिक रहस्यों को न जानने के कारण आज उस सामाजिक उत्सव के रूप में ही मानते हैं और महान आध्यात्मिक उन्नति से वंचित रह जाते हैं। कहां यह ईश्वरीय जुआ और कहा वह स्थूल जुआ जिसके कारण कितने लोगों को जेल की यातना सहनी पड़ती है।

अब हम प्रतिज्ञा करें कि ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा मन-मन्दिर की सफ़ाई कर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव से आत्मा की ज्योति प्रज्ज्वलित करेंगे, 'आसुरी अवगुणों और संस्कारों का खाता बन्द कर दैवी गुण सम्पन्न बनेंगे तथा अपने तन-मन-धन को मानव मात्र के आध्यात्मिक उत्थान में लगा देंगे। फिर तो इस पुण्यभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना, हो जायेगी जहाँ दुःख-अशान्ति का नामोनिशान भी नहीं रहेगा। शेर-बकरी एक घाट पर जल पियेंगे और अखुट धन-सम्पत्ति से नर-नारी मालामाल हो जायेंगे। इतना महान अन्तर है मिट्टी के जड़ दीप जलाने और चैतन्य आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करने में।

इस पुण्यभूमि भारतवर्ष पर फिर से श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना हो जाएगी

तो फिर 21 जन्मों के लिए तुमको कंचन काया, सतोप्रधान मन और अखुट धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

ओम शांति रिट्रीट सेंटरः प्रशासक वर्ग के लिए **सेमीनार** आयोजित, मोटिवेशनल वक्ता बीके शिवानी ने बताए बेहतर प्रशासन के टिप्स

श्रेष्ठ संकल्प और बोल करते हैं हीलिंग का कार्य

सभा को संबोधित करते हुए बीके आशा, बीके बृजमोहन, बीके शिवानी तथा प्रशासक वर्ग के अधिकारीगण एवं अन्य श्रोता गण।

दूसरों को सम्मान देना ही सम्मान का पात्र बनना है : बीके आशा

■ शिव आमंत्रण

गुरुग्राम-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर में लाइफ स्कैपिंग फोर ब्राइटर फ्यूचर विषय पर प्रशासक वर्ग के लिए एक दिवसीय सेमीनार का आयोजन हुआ। इस अवसर पर बोलते हुए संस्था के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन ने अपने संबोधन में कहा कि प्रशासनिक सेवा में निष्पक्षता, गंभीरता, धैर्यता, मधुरता और नम्रता ये पांच सिद्धान्त बहुत ज़रूरी हैं। उन्होंने कहा कि हमारे विचारों में जितनी धैर्यता होगी उतना ही हम बेहतर निर्णय ले सकते हैं। हमारे संकल्प और बोल हीलिंग का कार्य करते हैं। आध्यात्मिक चिन्तन हमारे संकल्पों को शक्ति प्रदान करता है।

ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर की निदेशिका बीके आशा ने आशीर्वचन में कहा कि जीवन एक उत्सव है। हम स्वयं ही अपने जीवन के निर्माता हैं। अगर हम कोई भी संकल्प शुभ भावना और दृढ़ता से करते हैं तो वो अवश्य ही पूरा होता है। स्वयं के जीवन के अनुभव के आधार पर उन्होंने कहा कि जितना हम दूसरों को सम्मान देते हैं उतना ही सम्मान के पात्र बनते हैं। हमें दूसरों के रोल को भी स्वीकार करना चाहिए, तभी हम मानसिक उलझनों से मुक्त रह सकते हैं। उन्होंने कहा कि खुशनुमा जीवन जीने के लिए दूसरों की प्रशंसा करें। इस अवसर पर विशेष रूप से सुप्रसिद्ध मोटीवेशनल स्पीकर बीके शिवानी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि आज हम शरीर का ध्यान तो रखते हैं लेकिन मन का ध्यान नहीं रखते। तन की स्वच्छता के साथ मन की स्वच्छता भी बेहद ज़रूरी है। जो दिखाई देता है, उसका तो हम ध्यान रखते हैं लेकिन जो दिखता नहीं है उसका ध्यान नहीं रखते। मन बहुत सूक्ष्म है और सूक्ष्म का प्रभाव अधिक पड़ता है। हमारे तन का स्वास्थ्य भी मन के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। हम इमोशनली जितना मजबूत होंगे, उतना ही हमारा स्वास्थ्य भी बेहतर होगा। कार्यक्रम में दिल्ली, जी.बी. पन्त हॉस्पिटल के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. मोहित गुप्ता ने कहा कि मैं पिछले 37 वर्षों से राजयोग का अभ्यास कर रहा हूँ। मन की शक्तिशाली स्थिति के द्वारा हम कैसी भी मुश्किल परिस्थिति का सामना कर सकते हैं। आध्यात्मिकता

भावनात्मक स्वस्थ व्यक्ति ही रह सकता है खुश : बीके शिवानी

हमें अन्दर की ओर ले जाती है जिससे कि हम स्वयं के सामर्थ्य को जान सकते हैं। हर समस्या का हल हमारे भीतर है। कार्यक्रम का संचालन बीके विधात्री ने किया। कार्यक्रम में भारतीय प्रशासनिक सेवाओं के अधिकारी, भारतीय पुलिस सेवाओं के अधिकारी, औद्योगिक एवं शिक्षण संस्थाओं के अनेक अधिकारी एवं प्रबन्धकों ने शिरकत की।

आंतरिक रूप से मन स्वच्छ रहे तो सब स्वच्छ रहेंगे

सभा को संबोधित करते हुए आलोक अग्रवाल।

समस्तीपुर रेल मंडल स्वच्छता पखवाड़े में आलोक अग्रवाल के विचार

■ शिव आमंत्रण । **समस्तीपुर, बिहार** ।

समस्तीपुर रेल मंडल द्वारा 14 सितंबर से 2 अक्टूबर तक चलाये गये स्वच्छता पखवाड़े का समापन समारोह समस्तीपुर रेल मंडल और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में रेलवे स्टेशन पर आयोजित किया गया। सर्वप्रथम डीआरएम आलोक अग्रवाल ने गांधीजी को श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन द्वारा डीआरएम, एडीआरएम, महिला कल्याण समिति की अध्यक्षा, ब्रह्माकुमारीज़ के बीके कृष्ण, बीके सविता ने संयुक्त रूप से किया। मौके पर डीआरएम आलोक अग्रवाल ने कहा कि बाहरी स्वच्छता के लिए आन्तरिक स्वच्छता की भी अति आवश्यकता है। जब आन्तरिक रूप से हमारा मन स्वच्छ रहेगा, तभी बाहरी स्वच्छता के लिए हम सदा तत्पर रह सकते हैं। स्वच्छता पखवाड़े में अच्छा कार्य करने वाले मंडल के अनेक रेलवे स्टेशन से आये हुए अधिकारियों को डीआरएम ने पुरस्कृत किया। बीके तरुण ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि कोरोना विश्व के लिए भयानक त्रासदी बनकर सामने आया लेकिन इसने हमें स्वच्छता का संदेश दिया है।

गांधी जी ने कहा था- स्वच्छता स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है। जहां आन्तरिक और बाह्य स्वच्छता है वहां ईश्वर का निवास होता है। राजयोग हमारे विचारों का शुद्धिकरण करता है जिससे हमारा तन, मन और प्रकृति सभी शुद्ध होते हैं और स्वच्छता के प्रति हमारी जागरूकता स्वतः बनी रहती है। बीके कृष्ण ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के रामराज्य के सपने को पूरा करने विश्वपिता परमात्मा भारत भूमि पर रामराज्य लाने का कार्य विगत 85 वर्षों से कर रहे हैं। बीके सविता ने राजयोग मेडिटेशन द्वारा सबको शान्ति का अनुभव कराया।

चैतन्य देवियों की झांकी में दिया नशामुक्ति का संदेश

■ शिव आमंत्रण । **सागर-म.प्र.** ।

ब्रह्माकुमारीज के सागर सेवाकेंद्र के उपसेवाकेंद्रों राहतगढ़ में बीके नीलू, गौरझामर में बीके लक्ष्मी, केसली में बीके संध्या, बंडा में बीके सीता और मालथौन में बीके खुशबू बहन के नेतृत्व में चैतन्य नौ देवियों की झांकी सजाई गई। झांकियों को निहारने के लिए बड़ी संख्या में भाई-बहन पहुंचे। वहीं गौरझामर के पास स्थित डोमा जैतपुर गांव में लगाई गई झांकी में सागर से आए ब्रह्माकुमार भाईयों ने नशामुक्ति का संदेश दिया। साथ ही नवरात्र के आध्यात्मिक रहस्य पर प्रकाश डाला। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके छाया मुख्य अतिथि के रूप शामिल हुईं।

सागर में एकसाथ कई स्थानों पर विराजीं चैतन्य देवियां

गौरझामर के पास स्थित डोमा जैतपुर में लगाई गई चैतन्य देवियों की झांकी।

परमात्म संबंध से तनाव व कमजोरियों से मुक्ति

■ शिव आमंत्रण । **सरगुजा-छ.ग.** ।

सरगुजा पुलिस ने ब्रह्माकुमारीज़ के साथ मिलकर नशा मुक्ति के लिए एक नव अभियान की शुरुआत की। इस कार्यक्रम का उद्घाटन गर्ल्स गवर्नमेंट स्कूल में किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रुप में सरगुजा रेंज के आईजी अजय कुमार यादव, एसपी अमित तुकाराम, कलेक्टर संजीव कुमार झा, एडिशनल एसपी विवेक शुक्ला ने किया। मौके पर बीके विद्या ने कहा कि आज विश्व में हर व्यक्ति स्वस्थ रहना चाहता है क्योंकि स्वस्थ और तनाव मुक्त व्यक्ति ही सफलता के शिखर पर पहुंच सकता है। लेकिन दुनिया में आज अनेक कारणों से तनाव बढ़ता जा रहा है और तनाव से मुक्ति पाने के लिए मनुष्य नशा करता है। भारत को महात्मा गांधी जैसे महान पुरुषों ने अंग्रेजों की गुलामी से तो आजाद कर दिया लेकिन आज पूरे भारतवासियों को अनेक प्रकार के व्यसन ने अपने गुलामी में जकड़ रखा है इसके कारण मनुष्य पतन की ओर जा रहा है। उन्होंने अनेक उदाहरणों द्वारा बताया कि तंबाकू से मनुष्य अनेक प्रकार के रोगों के शिकार हो जाते हैं और यह जहर मौत के द्वार तक पहुंचा देता है। इन सब व्यसनों से मुक्त होने का राजयोग एक कारगर उपाय है। जब हम परमात्मा से संबंध जोड़ते हैं तो हमारे जीवन में सुख-शांति आती है। हम तनाव से मुक्त होते हैं और अनेक प्रकार की कमजोरियों से मुक्ति पाते हैं। समाज कल्याण विभाग के अधिकारी, शिक्षा अधिकारी, टीचर्स एवं 11वीं-12वीं के करीब 800 बच्चे कार्यक्रम में उपस्थित थे।

नशा मुक्ति कार्यक्रम में उपस्थित मंचासीन अतिथि।

इंडियन आइडल रहे गायक **हरीश मोयल** ने सपरिवार ब्रह्माकुमारीज़ का किया भ्रमण, बोले-

गीत-संगीत में फूहड़ता का समाज पर बुरा असर

■ शिव आमंत्रण

आबू रोड (राजस्थान)। इंडियन आयडल रहे गायक हरीश मोयल ने कहा कि पहले के गीतों में एक संदेश था। परन्तु आज की गीतों में भी लोग द्विअर्थों का तड़का डालते है, इसका समाज पर बुरा असर पड़ता है। वे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में दो दिवसीय प्रवास के दौरान बात कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पहले के जमाने में गीतों में सार होता था। उन दिनों की गीतों का मकसद समाज में सद्भावना और भातृत्व भाव को बढ़ावा देना होता था। परन्तु आज संस्कृति को दूषित करने वाले गीता और संगीत बन रहे है जिसका बच्चों पर बुरा असर पड़ता है। मेरा प्रयास रहता है कि हम ऐसे गीत गाये और बनायें जिससे लोगों में सकारात्मकता का विकास हो। लोग अपने परिवार के साथ सुन सकें। जिससे आध्यात्मिक उन्नति हो। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से काफी लम्बे से जुड़ा हुआ है हमारे जीवन में भी बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। मेरी दिनचर्या और सोच दोनो ही सकारात्मक हुई है। गीतकार विशाल कोठारी ने कहा कि आध्यात्मिक और सकारात्मक गीत गाने से जीवन में एक सुकुन मिलता है। इसलिए हमेशा आध्यात्मिकता मनुष्य को जीवन में अपनाना चाहिए। इस संस्थान में आने से हमारे जीवन में एक अद्भुत शक्ति का संचार होता है। इसलिए प्रतिदिन जीवन में आध्यात्मिकता को स्थान देना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके संतोष तथा कार्यकारी सचिव ने शॉल ओढ़ाकर तथा ईश्वरीय सौगात भेंटकर सम्मानित किया। हरीश मोयल तथा विशाल कोठारी सपरिवार माउण्ट आबू प्रवास पर आये हैं। इस अवसर पर मुम्बई बोरीवली की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके संगीता और बीके कविता भी उपस्थित थी।

हरीश मोयल तथा विशाल कोठारी को सम्मानित करते बीके मृत्युंजय एवं बीके संतोष दीदी।

आध्यात्मिक मूल्यों से कोरोना काल जैसी परिस्थितियों में मिलती है मदद: त्यागी

शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष बीके मृत्युंजय को सम्मानित करते वेंकेटेश्वरा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. राजीव त्यागी।

■ शिव आमंत्रण । **आबू रोड** । यूपी के गजरौला स्थित वेंकेटेश्वरा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ राजीव त्यागी ने कहा कि भौतिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक मूल्यों की पढ़ाई ने करोना काल की परिस्थितियों में आध्यात्मिकता की पावर ने बहुत इससे उबरने में मदद की है। हमारे वेंकेटेश्वरा विश्वविद्यालय समूह के सभी संस्थानों में पचास हजार से ज्यादा विद्यार्थियों ने इसकी पढ़ाई से लाभान्वित हुई हैं। वे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन आबू रोड में प्रवास के दौरान कही। आगे उन्होंने कहा कि जिन बच्चों ने इस आध्यात्मिक पढ़ाई को जीवन में अपनाया है तब से उन विद्यार्थियों के संस्कारों और सकारात्मक शैली का विकास हुआ है। हमारा लक्ष्य है कि पूरे विश्व के कई देशों में इसे प्रचार-प्रसार करने का प्रयास करूंगा। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का शिक्षा प्रभाग इस क्षेत्र में लगातार प्रयास कर रहा है। इस दौरान उन्होंने मोमेंटों भेंटकर शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष बीके मृत्युंजय को वेंकेटेश्वरा विश्वविद्यालय की ओर से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बीके मृत्युंजय ने कहा कि दो वर्ष पूर्व वेंकेटेश्वरा विश्वविद्यालय तथा ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के शिक्षा प्रभाग के बीच मूल्य आधारित डिप्लोमा और डिग्री कोर्स का समझौता हुआ है। यह पढ़ाई अधिकतर विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। कई विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों में यह पढ़ाई का कोर्स चलाया जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके संतोष ने मोमेंटों भेंटकर डॉ राजीव त्यागी को सम्मानित किया। रूड़की के वरिष्ठ पत्रकार गोपाल नरसन ने कहा कि मैं जबसे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़ा हूँ तब से जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है। वैल्यू एजुकेशन के डाईरेक्टर डॉ पांडयामणि समेत कई लोग उपस्थित थे।

वेंकेटेश्वरा विवि के कुलपति ने बीके मृत्युंजय को किया सम्मानित

मन को जीतने वाला ही है जगतजीत: बीके सुनीता

■ शिव आमंत्रण । **सूरत, गुजरात** । सूरत में माहेश्वरी महिला क्रिकेट टीम के विजेताओं के लिए समारोह का आयोजन किया गया। सूरत जिला माहेश्वरी सभा द्वारा आयोजित क्रिकेट टूर्नामेंट में पूरे भारत से माहेश्वरी समाज के 34 महिला क्रिकेट टीम ने सहभाग लिया था। नारी शक्ति प्रीमियर लीग के सभी खिलाड़ियों के लिए आयोजित कार्यक्रम में जिला माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष अविनाश चांडक, ब्रह्माकुमारीज़ से विशेष आमंत्रित मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. बीके सुनिता चांडक ने भी हिस्सा लिया। विजेताओं को सम्बोधित करते हुए बीके डॉ. सुनिता ने कहा कि मन को जीतने वाला ही जगतजीत है। बीके डॉ. सुनिता ने कहा कि जब हम कहते है मैं कौन? तो हम इस भान से परे हो जाते है कि हम नर है या नारी है। नर और नारी के भान से भी परे मैं एक आत्मा शक्ति स्वरूप हूं। यह स्वमान हमको सबसे ऊंचा उठाता है। यह नारीत्व एक गुण है जो हर कोई आत्मा के अंदर है फिर वह चोला चाहे नर का हो या नारी का हो और मैं जो आत्मा शक्तिस्वरूप हूं तो मेरा कौन? मेरा है सर्वशक्तिमान परमपिता शिव परमात्मा। आगे सूरत के श्री बचकानीवाला विद्यामंदिर स्कूल में जिन माताओं की बेटियां है उनके लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आयोजक प्राचार्य डॉ. रीता फूलवाला रही।

हर चीज को पॉजीटिव लेंगे तो हर क्षण होगा आनंददायी

विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस पर सभा को संबोधित करते हुए बीके नारायण।

■ शिव आमंत्रण । **नवापारा (छग)** । विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में इंदौर से आए धार्मिक प्रभाग के जोनल कोऑर्डिनेटर बीके नारायण ने हर परिस्थिति में सकारात्मक रहने का आह्वान किया। यदि आपमें हर चीज को पॉजिटिव तरीके से समझने की भावना है तभी आप जीवन के प्रत्येक क्षण का आनंद ले सकेंगे। फिर चाहे परिस्थिती कष्टदायक हो या सुखदायक। नकारात्मकता एक विष की तरह होती है जो कि धीरे-धीरे आपके व्यक्तित्व को खत्म कर देती है। इसलिए हर परिस्थिति में सकारात्मक रहने का प्रयास करें। इस अफ़सोस के साथ कभी न उठिये कि कल आप क्या नहीं कर पाए बल्कि इस सोच के साथ उठिये कि आज आप क्या -क्या कर सकते है। तनाव आजकल लोगों पर इतना हावी हो चुका है की इससे निकलने के लिए लोग अक्सर नशीली पदार्थों का सहारा लेते है। यह दीमक की तरह शरीर और मन को खोखला कर देता है। मानसिक शक्ति के कमजोर होने का कारण मन में व्यर्थ व नकारात्मक संकल्प की अधिकता है। हेमंत साहू ने बताया कि वर्तमान टेक्नोलॉजी संस्कृति तनाव का कारण बनती जा रही है। समस्या का साइज हमारे मन की शक्ति पर निर्भर करता है। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके पुष्पा ने तनाव में नशीले पदार्थों के बजाय परमात्म सहारा लेने की सलाह दी।

कोविडकाल में की गई समाजसेवा को देखते हुए बीके मधु सम्मानित

■ शिव आमंत्रण । **राजगढ़ (म. प्र.)** । आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में नगर पालिका परिषद् द्वारा कोविड-19 काल में समाज सेवा के सम्मान समारोह में एसडीएम नेहा साहू, नगर पालिका सीएमओ पवन अवस्थी, पूर्व विधायक रघुनंदन शर्मा, पूर्व भाजपा अध्यक्ष दीपेंद्र चौहान द्वारा बीके मधु को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

नवरात्र पर्व तीन दिवसीय झांकी के दूसरे दिन तिरंगा झंडा की थीम पर विराजीं चैतन्य देवियां

देवियों की झांकी से दिया देशभक्ति का संदेश

■ शिव आमंत्रण । **मंडीबामोरा/बीना (म. प्र.)** । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मंडीबामोरा सेवाकेंद्र की ओर से हिंदू धर्मशाला में तीन दिवसीय चैतन्य देवियों की झांकी लगाई गई। इस दौरान झांकी के माध्यम से देशशक्ति और पर्यावरण सुरक्षा का संदेश दिया गया। दूसरे दिन तिरंगे झंडे के तीन कलर के आधार पर झांकी सजाई गई। इसके माध्यम से देशभक्ति का संदेश दिया गया।

झांकी में तीन देवियां केसरिया रंग में, तीन देवियां श्वेत रंग में और तीन देवियां हरे रंग में विराजित हुई। तीसरे दिन पर्यावरण बचाओ की थीम पर चैतन्य देवियां विराजित की गईं। सेवाकेंद्र संचालिका बीके जानकी ने कहा कि केसरिया रंग धर्म का प्रतीक है। सफेद रंग शांति और पवित्रता का और हरा रंग खुशहाली का संदेश देता है। इस तरह हमारे राष्ट्रीय ध्वज में एक साथ धर्म- संस्कृति, शांति-पवित्रता और खुशहाली का संदेश मिलता है जो जीवन का आधार है। इस मौके पर बिहारी जी मंदिर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष विक्की गुप्ता, बीके मधु बहिन, गुड्डी बहिन और शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक व पत्रकार बीके पुष्पेंद्र विशेष रूप से मौजूद रहे।

चैतन्य देवियों की झांकी के दौरान मौजूद बीके जानकी, बीके मधु, पत्रकार बीके पुष्पेंद्र व अन्य।

ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम जाने वाली सड़क, 'ओम शांति रोड' का उद्घाटन

■ शिव आमंत्रण । अररिया/बिहार। अररिया आरएस मुख्य मार्ग से ब्रह्माकुमारीज आश्रम जाने वाला सड़क का नामकरण कर ओमशांति रोड के नाम से शनिवार को सांसद प्रदीप कुमार सिंह व ब्रह्माकुमारीज के जिला संचालिका राजयोगिनी बीके उर्मिला बहन ने मिलकर किया। मौके पर बैंक कर्मी संजय गुप्ता ने इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का संक्षिप्त जानकारी भी लोगों को दिये। बीके उर्मिला बहन ने सभी को ऐसे मौके पर शुभकामनाएं दी व अपने जीवन को परमात्मा ज्ञान सुनकर सवारने का निमंत्रण दिया। वहीं सांसद प्रदीप कुमार सिंह ने कहा कि यह संस्था विश्व के 157 देशों में है। यह 20 विंग्स के द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवाएं दे रहा है। उन्होंने कहा कि कितनी भी तारीफ उर्मिला बहन का किया जाये वह कम है। एक नारी होने के बाद भी अथक प्रयास से जिले को आध्यात्मिक वातावरण देने लोगों को चरित्रवान बनाने सुंदर समाज का निर्माण करने का सपना लेकर लोगों के बीच जाकर परमात्मा शिव की वाणी को साकार कर रही हैं। मौके पर एएसएम अशोक मंडल, राजू अग्रवाल, राज प्रकाश भाटिया, पूर्व नगर पार्षद गौतम शाह, अन्नू गुप्ता, अनिल शाह, राजू, राधे आलोक चतुर्वेदी, मोहन सिंह, रविंद्र गुप्ता, दिलीप सिंह, रंजीत साह, अमरेंद्र गुप्ता, मुनीलाल गुप्ता, कन्हैया सिंह, बबलू पासवान सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

परमात्मा परम शिक्षक बनकर हमें दे रहे सबसे ऊंचा ज्ञान

शिक्षक दिवस प्रोग्राम में सम्मिलित डॉ. वीना सिंह, डॉ. पूर्णिमा शेखर सिंह, प्रोफेसर एससी रॉय, डॉ. अखंडानंद त्रिपाठी, बीके शंकर, बीके अंजू तथा बीके रविन्द्र।

■ शिव आमंत्रण

पटना खाजपुरा/बिहार । प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्व विद्यालय नन्दनपुरी, खाजपुरा सेवाकेंद्र पर शिक्षक दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान पटना की अध्यक्ष डॉ. वीना सिंह, आर्यभट्ट भौगोलिक अध्ययन केंद्र की निदेशिका डॉ. पूर्णिमा शेखर सिंह, पूर्व एमएलसी एवं प्रिंसिपल, वाणिज्य महाविद्यालय, तथा निदेशक, यूजीसी ह्यूमन रेऊर्स डेवलपमेन्ट सेंटर पटना यूनिवर्सिटी, चाणक्य लॉ विश्वविद्यालय पटना बिहार के अध्यक्ष प्रोफेसर एससी रॉय, पटना विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अखंडानंद त्रिपाठी, जय प्रकाश नारायण विश्व विद्यालय, छपरा के अध्यक्ष प्रोफेसर बीके शंकर शाह तथा अन्य शिक्षकों को राजयोगिनी बीके अंजू तथा बीके रविन्द्र ने संस्था की ओर से सम्मानित किया।

इस मौके पर बीके अंजू ने बताया, कि परमात्मा ही हमारा परम शिक्षक हैं। परमात्मा हमें ऊंचा ज्ञान इस समय दे रहे हैं। परमात्मा ही हमें अच्छे संस्कार देते हैं। आज सम्पूर्ण विश्व में सुख, शांति, सद्भावना तथा संस्कार दिखाई नहीं देता। परमात्मा शिव जो कि हमारे परम शिक्षक हैं वो हमें ये दिव्य संस्कार देते हैं जब विश्व में दुःख, अशांति, ईर्ष्या तथा बुराई बढ़ती है। परमपिता, परमशिक्षक, परमात्मा शिव इस धरा पर आ चुके हैं और हमारे चरित्र निर्माण का कार्य कर रहे है। अपना भाग्य बनाने का यह सुनहरा मौका है।

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी को ईश्वरीय सौगात प्रदान की

■ शिव आमंत्रण । वडोदरा, गुजरात । वडोदरा भाजपा द्वारा भाजपा अध्यक्ष डॉ. विजय शाह के नेतृत्व में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के उपलक्ष में आयोजित प्रोग्राम में श्री. मोदी को जन्मदिन की बधाई एवं भारत के रोड ट्रांसपोर्ट एवं हाईवे के कैबिनेट मंत्री भ्राता नितिन गडकरी को आशीर्वचन के बाद वडोदरा अटलादरा सेवा केंद्र प्रभारी बीके अरुणा ने ईश्वरीय सौगात भेंट की।

गुजरात के मुख्य सचिव का बीके मृत्युंजय ने किया स्वागत

गुजरात के नवनियुक्त मुख्य सचिव पंकज कुमार का स्वागत करते हुए संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय व अन्य भाई-बहनें।

■ शिव आमंत्रण । गांधी नगर । गुजरात के गांधी नगर में आईएएस पंकज कुमार की नियुक्ति गुजरात राज्य के मुख्य सचिव पद पर होने पर पद ग्रहण के समय सचिवालय में उन्हें शुभेच्छा देने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से माउण्ट आबू से आए संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, गांधीनगर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कैलाश ने मुलाकात की और पुष्पगुच्छ, मोमेंटो से अभिनंदन करने के बाद शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। चिलोड़ा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके तारा, उर्जानगर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके रंजन भी मुख्य रूप से मौजूद रहीं और सभी ने उनके प्रति शुभकामना ज़ाहिर की।

नवरात्र पर चैतन्य देवियों की झांकी लगाई

■ शिव आमंत्रण । बेलदौड़/खगड़िया । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय बेलदौड़ सेवाकेंद्र खगड़िया की संचालिका बीके रिचा द्वारा नवरात्री पर्व के उपलक्ष्य में देवियों की चैतन्य झांकी निकाली गई। जहां बेगूसराय से पहुंचे बीके राजऋषि ने गीत गा कर लोगों को संबोधित किया।

नई सृष्टि की स्थापना का कार्य जारी

■ शिव आमंत्रण । बेगूसराय/बिहार । बेगूसराय ब्रह्माकुमारी सेवा केंद्र द्वारा श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का आयोजन स्थानीय सेवा केंद्र प्रभु प्रसन्न भवन में किया गया। इसमें दिव्य चेतन झांकी एवं श्रीकृष्ण की लीला की प्रस्तुति की गई। ब्रह्मा कुमारी कंचन बहन ने कहा, कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य पर हम सभी एक स्वर्णिम भारत की कल्पना करें। वास्तव में गीता में जो महावाक्य है कि धर्म का पतन होने लगता है तो मैं अवतरित होकर धर्म की पुनः स्थापना करता हूं। श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उत्सव हम इसी याद में मनाते हैं। हम सभी को जन्माष्टमी पर जागरूक होना होगा। उपस्थित लोगों ने स्वर्णिम दुनिया का अनुभव किया एवं श्रीकृष्ण पर आधारित नाटक का आनंद लिया। सभा में डॉ. एके राय, डॉ. शशि भूषण, डॉ. रामप्रवेश, सेंट जोसेफ स्कूल के डॉयरेक्टर अभिषेक कुमार, राजू कुमार, आर्यभट्ट के डायरेक्टर अशोक कुमार सिंह अमर, लखीसराय के प्रतिष्ठित व्यवसायी राजेंद्र सिंघानिया, लखीसराय के डॉ. श्याम सुंदर, सरिता सल्तानियां, राजू सोनी के अलावा ब्रह्माकुमारीज़ के सभी भाई-बहन मौजूद थे।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में काव्य गोष्ठी का आयोजन

■ शिव आमंत्रण । अजमेर । अंतरराष्ट्रीय साहित्य परिषद और अजमेर काव्य संगम द्वारा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शास्त्री नगर शाखा में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता शहर के वरिष्ठ साहित्यकार देवदत्त शर्मा ने की। काव्य गोष्ठी में विनीता अशित जैन, शुभदा भार्गव, अंजू अग्रवाल लखनवी, प्रदीप गुप्ता, डॉ. लाल थदानी, कृष्ण कुमार शर्मा, डॉ. नीलिमा तिग्गा, डीसी देवड़ा सुरगानन्द, भावना शर्मा, गंगाधर शर्मा हिंदुस्तान ओम प्रकाश चास्ता, सुधा मित्तल, राजेश भटनागर, श्रीमती मधु खंडेलवाल मधुर, डॉ. सुदीप डांगावास, डॉ. इंदुबाला, डॉ. शारदा देवड़ा और सरला शर्मा ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं। काव्य जगत को समर्पित बहुभाषी समाचार पत्र दिव्य दर्शन भारती का विश्व के 70 देशों में एक साथ वैश्विक विमोचन भी किया गया। भारत सरकार के महिला और बाल विकास आयोग की वाइस प्रेसीडेंट तथा डीडी भारती नेटवर्क की डायरेक्टर श्रीमती इंदु आचार्य ने मुंबई से ऑनलाइन उपस्थित होकर अपनी शुभकामनाएं दीं। डी भारती नेटवर्क की ओर से सभी कवियों को सम्मान पत्र प्रदान किए गए।

■ शिव आमंत्रण । बेगूसराय/ बिहार । बेगूसराय के पीपरा रोड स्थित प्रभू पसंद भवन में नवरात्र पर्व के उपलक्ष्य में उत्तरबिहार की संचालिका राजयोगिनी बीके रानी एवं बीके कंचन द्वारा विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

राजयोग मेडिटेशन से सहज एकाग्रता संभव

35वीं बटालियन में पुलिस कर्मियों के ग्रुप फोटो में बीके ओमलता के साथ बीके बहनें।

■ शिव आमंत्रण । मण्डला । म.प्र. के मण्डला सेवाकेंद्र के द्वारा 35वीं बटालियन में पुलिस कर्मियों के लिए तनावमुक्ति प्रबंधन कार्यक्रम विशेष आयोजित किया गया जिसमें पुलिस अधीक्षक अभिजीत रंजन ने बहनों का स्वागत और सत्कार किया तथा मण्डला सेवाकेंद्र प्रभारी बीके ममता ने सभी को तनावमुक्त जीवन जीने की विधि से अवगत कराते हुए स्वयं की व परमात्मा की सत्य पहचान दी। पड़ाव सेवाकेंद्र प्रभारी बीके ओमलता ने बताया, कि जब हमारा मन एकाग्र होता है तब हम किसी भी कार्य को सही ढ़ंग से और सही समय पर कर सकते हैं जो कि राजयोग से ही संभव है। अंत में कई पुलिस अधिकारियों को बहनों ने सौगात भेंट की तथा मन को सशक्त और तनावमुक्त बनाने के लिए राजयोग सीखने का आहवान किया।

समाज में बदलाव आध्यात्म से ही संभव

■ शिव आमंत्रण । कादमा (हरियाणा) । शिक्षक दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र रामबास में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में हरियाणा योग आयोग के रजिस्ट्रार डॉ. हरीश चंद्र, ग्रामीण विकास मंडल संस्थापक राजेंद्र कुमार, प्राचार्य हरिकिशन राणा, डीएसएम स्कूल के निदेशक अरुण सांगवान के साथ अन्य शिक्षकों ने डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन को श्रद्धा सुमन अर्पित किए एवं दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कादमा-झोझूकलां क्षेत्रीय प्रभारी बीके वसुधा ने कहा कि डॉ. राधाकृष्णन एक सच्चे दार्शनिक, मेहनती, अथक थे। वास्तव में वह महान व्यक्तित्व के धनी थे। हम उनके पद चिन्हों पर चल अपने बच्चों में श्रेष्ठ संस्कार, नैतिक व मानवीय मूल्य भरें तभी हम राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। अध्यापक त्याग, तपस्या और धैर्यता के साथ बच्चों को सुसंस्कारित कर श्रेष्ठ समाज का निर्माण करता है।

योग की विधि बताई

संबोधित करते पूर्व लेफ्टिनेंट कर्नल बीके विकास चौहान एवं बीके दीपा।

माउण्ट आबू । ब्रह्माकुमारीज़ के सिक्योरिटी सर्विस विंग द्वारा सीआइएसएफ पर्सोनेल के लिए एराडिकेशन ऑफ स्ट्रेस विषय पर ऑनलाइन इवेंट का आयोजन किया गया जिसमें जबलपुर से पूर्व लेफ्टिनेंट कर्नल विकास चौहान ने सेल्फ एंपावरमेंट के बारे में बताया तो मुंबई से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके दीपा ने पीसफुल लाइफ के लिए मेडिटेशन टेक्निक्स बताए। बीके विकास ने कहा, अगर आप मेडिटेशन का अभ्यास करेंगे तो सचमुच आपको बहुत आनंद आयेगा। जीवन में परिस्थितियां आनी ही है। ऐसा नहीं हो सकता कि आज के जीवन में हमारे सामने परिस्थिति न आये। परिस्थिति आयेगी लेकिन परिस्थिति के पार परमात्मा की यह याद हमें पहुंचाएगी। मेडिटेशन या योग यह कोई मुश्किल चीज नहीं है।

समारोह | काशी संकल्प समारोह में ब्रह्माकुमार भाई-बहिन हुए शामिल

बीके भाई-बहनों से मिलकर महसूस होता है सकारात्मक तरंगों का प्रवाहः संपादक रंजन

■ शिव आमंत्रण। वाराणसी, उप्र.। काशी के सांसद व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्म दिवस की पूर्व संध्या पर वाराणसी के कैण्टोनमेण्ट स्थित होटल सूर्या में एक विशेष समारोह-काशी संकल्प आयोजित किया था। आयोजक काशी के वरिष्ठ पत्रकार अरविंद सिंह और वरिष्ठ पत्रकार डा. लोकनाथ पाण्डेय के निमंत्रण पर ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से सारनाथ-वाराणसी के बीके विपिन और बीके राजू ने समारोह में शिरकत की। मुख्य अतिथि भाजपा उत्तरप्रदेश के सह-प्रभारी सुनील ओझा, अध्यक्ष-बनारस हिंदु विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. गिरीशचंद्र त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि राज्यसभा सदस्य और महाभारत में द्रोपदी की अहम् भूमिका को जीवीत करने वाली महान कलाकार रूपा गांगुली, दिल्ली से आए हुए अति विशिष्ट अतिथि स्वामी जितेंद्रानंद सरस्वती महाराज। देश के सबसे बड़े पत्रकार संगठन एन यूजे आई प्रमुख रास बिहारी, ज्योतिष शास्त्र के मुर्धन्य विद्वान और काशी विद्वत परिषद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रो. रामचंद्र पाण्डेय के साथ काशी विद्वत परिषद् के महामंत्री प्रो. रामनारायण द्विवेदी रहे।

राज्यसभा सांसद गांगुली का अभिवादन करते बीके विपिन एवं अन्य अतिथि।

कार्यक्रम के पश्चात् राज्यसभा सदस्य रूपा गांगुली, स्वामी जितेंद्रानंद सरस्वती महाराज, काशी विद्वत परिषद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रो. रामचंद्र पाण्डेय, एन यूजे आई प्रमुख रास बिहारी, राष्ट्रीय सहारा वाराणसी के सम्पादक स्नेह रंजन आदि अति विशिष्ट विद्वतजनों से मिलकर परमात्म संदेश देने के साथ ज्ञान चर्चा करने का अवसर मिला। उन्होंने कहा, की-संस्था के बहन-भाईयों से मिलकर एक अलग तरह का सकारात्मक और शांतिपुर्ण तरंगों का प्रवाह महसुस होता है। ये संस्था की दिव्यता और परमात्म शक्तियों का परिचायक है।

हमेशा अच्छे कर्म और सत्संग पर ध्यान रहे

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम में महंत रामजी का प्रभारी बीके आशा समेत अनेक सदस्यों ने तिलक, पगड़ी और माला पहनाकर स्वागत किया। इस मौके पर महंत रामजी ने कहा कि हमारे बहुत पुण्य कर्म होने पर ही हमें सत्संग मिलता है। जीवात्मा जब गर्भ में होती है तो परमात्मा से निवेदन करती है कि प्रभू यहां से संसार में भेजो तो हम सदा अच्छे कर्म करेंगे। संसार में माया के प्रभाव में आकर सब कुछ भूल जाती है और गलत कर्मों में लिप्त होती है। हम हमेशा अच्छे कर्म और सत्संग पर ध्यान देना चाहिए। बीके आशा ने राजयोग का महत्व बताते हुए अभ्यास कराया।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र
संयुक्त संपादक, शिव आमंत्रण

आत्म दीप जलाएं

हम वर्षों से भौतिक रूप से दीपोत्सव मनाते आ रहे हैं और मनाते रहेंगे। यहां विचारणीय है कि क्या वास्तव में इस देह में विराजमान जो दिव्य ज्योति, प्रकाश स्वरूप, ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप आत्मा है उसका दीप जला है? क्या आज भी आत्म ज्योति अज्ञान रूपी अंधकार में भटकी हुई है? क्या काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, द्वेष, बुराइयों रूपी तमस का साया हटा नहीं है? पद, पैसा, प्रतिष्ठा को ही जीवन का उत्सव मान लिया है? हम रोजमर्रा की जिंदगी में इतने मशगूल हो गए हैं कि आत्म ज्योति को निहारने, उससे बातें करने, हालचाल जानने और उसे परमात्म शक्ति रूपी भोजन कराना ही भूल गए हैं। लापरवाह और गैरजिम्मेदार हो गए हैं। देह और देह से जुड़े पदार्थों की पूर्ति में इतने मशगूल हो गए हैं कि आत्म दीप जलाना तो दूर उसे प्रायः भुला ही बैठे हैं। समय ऐसे ही निकलता गया तो आत्म दीप कब जलाएंगे। कब, आत्मा के परमपिता परमात्मा से मंगल मिलन मनाएंगे। जो जीवन का पहला कर्म, ध्येय और उद्देश्य था उसे आखिरी पड़ाव समझ लिया है। आत्म उत्सव रूपी दीप जलाना ही सच्चा दीपोत्सव है।

> आत्मा पाना था जो पा लिया...के ध्येय में समाहित होने लगती है और सृष्टि रूपी रंगमंच पर अभिनय करना आसान लगने लगता है।

प्रकाश बनेंगे तो स्वतः फैलेगा उजाला

जब हम आत्म दीप जलाकर प्रकाशपुंज बनेंगे तो शांति, प्रेम, भाईचारा, एकता, धैर्यता, सद्भाव का उजास अपने आप हमारे संपर्क में आने वाले परिजन, पड़ोसी और मित्र-संबंधियों में अपने आप फैलेगा। जरूरत है तो उसे सजाने, संवारने और साकार करने की। जब उस महादीप, महाशक्ति, परमशक्ति परमपिता परमात्मा से आत्मा के तार जोड़ते हैं तो अपनेआप आत्म दीप प्रकाशित होने लगता है। उसमें नई ऊर्जा का प्रवाह हो जाता है। आत्मा पाना था जो पा लिया...के ध्येय में समाहित होने लगती है और सृष्टि रूपी रंगमंच पर अभिनय करना आसान लगने लगता है। क्योंकि फिर उसके सामने अचानक कोई सीन का अभिनय करने के लिए आता है तो वह उसे परम शक्ति की शक्ति से सहज और शांत रूप से करके वाहवाही बटोर लेती है। बिना परमात्मा से मन रूपी तार जोड़े आत्मा रूपी दीपक जल नहीं सकता है? इसलिए व्यस्त दिनचर्या में से कुछ समय निकालकर दीपराज परमात्मा से अपनी आत्म ज्योति जलाते रहें, ताकि अंधकार रूपी अवगुण, बुराइयां सदा-सदा के लिए विदा हो जाएं।

तो जीवन बन जाएगा दीपोत्सव

सृष्टि के आदि में आत्मा संपूर्ण रूप में प्रकाशपुंज, शक्तिपुंज और दीपमय थी। लेकिन जन्म-मरण के चक्कर में आते-आते आज सतोप्रधान से तमोप्रधान और 16 कला संपूर्ण से कलाहीन बन गई है। ऐसे में फिर से आत्मा को संपूर्ण पवित्र, बेदाग, चमकदार हीरा बनाने और विषय-विकारों रूपी जंग को मिटाने के लिए परमात्म शक्ति ही एकमात्र जरिया है। यह तभी संभव है जब परम सद्गुरु के बताए पद्चिह्नों का अनुसरण करते हुए उस सद्ज्ञान को आत्मसात किया जाए।

फिर अंधकार को भगाना नहीं पड़ेगा

पांच दिवसीय दीपोत्सव महापर्व हमें सिखाता है कि जीवन में कितनी भी निराशा, समस्याओं, परिस्थितियों रूपी अंधकार क्यों न हो, लेकिन उमंग-उत्साह, आशा और सद्गुणों रूपी प्रकाश के आगे वह ठहर नहीं सकता है। इसलिए जीवन में कभी भी धैर्य, सद्मार्ग, ईमानदारी, सच्चाई, कर्तव्य परायणता और जीवन मूल्यों के साथ समझौता नहीं करना चाहिए, चाहे अंधकार के बादल कितने ही घने क्यों न हों। सत्य का सूर्य कभी अस्त नहीं होता है। जीवन में आने वाली परिस्थितियों का सामना करने के लिए हमें आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन से आत्मबल मिलता है। यही दीपोत्सव है, आत्म उत्सव और प्रकाश उत्सव है।

30 साल से आध्यात्म की रोशनी बिखेर रहा लंदन का ग्लोबल को-ऑपरेशन हाउस

ब्रह्माकुमारीज़ के लंदन स्थित ग्लोबल को-ऑपरेशन हाउस की 30वीं वर्षगांठ पर केक काटते हुए निदेशिका बीके जयंती, बीके जैमिनी एवं अन्य भाई-बहनें।

■ शिव आमंत्रण। **लंदन**। जीवन मूल्यों से मानवता को सम्पन्न करने में लंदन के ग्लोबल को-ऑपरेशन हाउस को विगत तीन दशक पूरे हो गए हैं। लंदन में ग्लोबल को-ऑपरेशन हाउस की 30वीं वर्षगांठ संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके जयंती, ग्लोबल को-ऑपरेशन हाउस के डायरेक्टर रतन दादा, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके मंदा, बीके जैमिनी, बीके मौरीन एवं अन्य बीके सदस्यों की उपस्थिति में बड़े ही धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर सभी वरिष्ठ सदस्यों द्वारा कैंडल लाइटिंग एवं केक कटिंग की गई। शैक्षिक कार्यक्रम, सेमिनार, व्यक्तिगत विकास के क्षेत्र में प्रशिक्षण, सकारात्मक सोच, ध्यान, अनुसंधान और विभिन्न सामाजिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में मूल्यों के अनुप्रयोग जैसी कई गतिविधियां ग्लोबल को-ऑपरेशन हाउस द्वारा पिछले 30 वर्षों से आयोजित की जा रही है। इस मौके पर सभी ने विश्व कल्याण की भावना के साथ अपनी शुभकामनाएं भी व्यक्त की।

किसी की कमजोरी या परिस्थिति के लिए हम जिम्मेदार नहीं

ऑनलाइन कार्यक्रम में बीके गोपी के विचार

■ शिव आमंत्रण। **लेस्टर (यूके)**। लेस्टर में ब्रह्माकुमारीज़ के हार्मनी हाउस द्वारा एंगर फ्री लाइफ (क्रोध मुक्त जीवन) विषय पर ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें लंदन से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके गोपी ने उदाहरणों से बताया कि क्रोध क्या है और इसे दूर कैसे किया जा सकता है। बीके गोपी ने कहा, कि झूट माना आप कुछ छिपा रहे हो, सिद्ध कर रहे हो या सत्य की एनर्जी से खिलाफ जा रहे हो। लेकिन व्हाईट लाईट को झूठ नही कहेंगे। क्योंकि वह सत्यता को प्रोटेक्ट कर रहा है। किसी के सेल्फ रिस्पेक्ट को प्रोटेक्ट कर रहा है, किसी की डिग्निटी को प्रोटेक्ट कर रहा है।

ये भी देखना है कि किसी की कमजोरी या कोई परिस्थिति के हम जिम्मेवार नहीं है। ये ड्रामा अनुसार एक परिस्थिति है, जो विविध फैक्टर्स से बनी हुई है। इस दौरान लेस्टर की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके सुकांती ने विषय पर गहराई से चर्चा की जिसके बाद बीके गोपी ने क्रोधमुक्त बनने के लिए राजयोग का अभ्यास भी कराया।

ऑक्सफोर्ड रिट्रीट सेंटर का नवीनीकरण व गृहप्रवेश

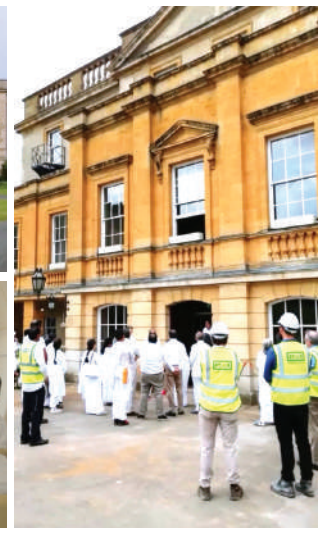

नवीनीकरण की हुई इमारत का उद्घाटन करते हुए बीके सदस्य।

■ शिव आमंत्रण। **ऑक्सफोर्ड**। हाल ही में ऑक्सफोर्ड स्थित ग्लोबल रिट्रीट सेन्टर का नवीनीकरण किया गया। कोरोना काल के कारण लम्बे समय से इसका रिन्यूवेशन चल रहा था। इसके पूरा होने पर विधिवत गृह प्रवेश किया गया। इस अवसर पर ग्लोबल कॉर्पोरेशन हाउस के डायरेक्टर रतन दादा, ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके जयंती, ब्रह्माकुमारीज़ जर्मनी सेवाकेन्द्रों की निदेशिका बीके सुदेश समेत कई लोगों ने फीता काटकर उद्घाटन किया। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों ने कहा कि कोरोना काल के कारण ज्यादा लोगों को नहीं बुला सके लेकिन जैसे ही कोरोना पूरा होगा सब लोग जरुर आयेंगे। इसके साथ ही सभी उपस्थित संस्थान के वरिष्ठ सदस्यों ने उम्मीद जताई कि यहां बाबा की अच्छी सेवायें चलेगी और लोगों को परमात्मा के वरदानों का वर्सा मिलेगा।

बेंबली इनर स्पेस सेवाकेंद्र की सेवाओं के हुए 25 वर्ष

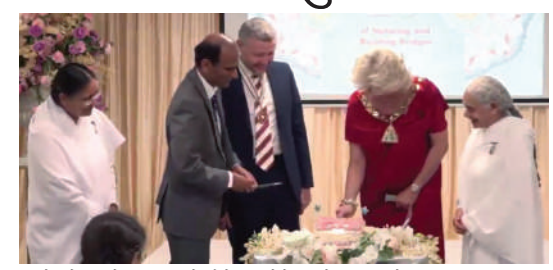

सेवाकेंद्र को 25 वर्ष पूरे होने पर होने पर केक काटते हुए अतिथि।

■ शिव आमंत्रण। **इनर स्पेस**। बेंबली इनर स्पेस के 25 वर्ष पूरा होने पर ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके जयंती ने कहा कि हमारा भाग्य है कि इस स्थान में सेवाओं के 25 वर्ष पूरे हो गये। इसका उद्घाटन तत्कालीन संस्थान की पूर्व संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने किया था। तब से लेकर आज तक यहां से अखंड सेवायें चल रही है। उम्मीद है कि आगे भी होती रहेगी।

व्लादिवोस्तोक सेवाकेंद्र पर मोबाइल आर्टिस्टिक एग्जीबिशन का आयोजन

व्लादिवोस्तोक में आयोजित एक्सिबीशन मे शामिल बच्चे।

■ शिव आमंत्रण। **व्लादिवोस्तोक**। रशिया के व्लादिवोस्तोक में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मोबाइल आर्टिस्टिक एग्जीबिशन आर्गेनाइज किया गया जिसका विषय रहा जर्नी टू द वर्ल्ड ऑफ हैप्पीनेस। एग्जीबिशन के इनौगेरेशन अवसर पर व्लादिवोस्तोक शहर में भारत के महावाणिज्य दूत शशि भूषण, शहर के प्रशासन में संस्कृति विभाग के उप प्रमुख तात्याना बारानोवा, इर्कुत्स्क में ब्रह्माकुमारीज़ की कोर्डिनेटर बीके लुदमिला, चिता में ब्रह्माकुमारीज़ की कोर्डिनेटर बीके नादेज्धा एवं होटल इक्वेटर की डायरेक्टर विक्टोरिया उपस्थित रहे।

आध्यात्मिक जगत की प्रतिष्ठित पत्रिका शिव आमंत्रण अब आपके सीधे हाथों में, अपने मोबाइल के QR Code Scanner से अभी इंस्टॉल करें और जानें अपडेट समाचार...

सूचना के लिए संपर्क करें

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।
वार्षिक मूल्य ₹ 110 रुपए, तीन वर्ष ₹ 330
आजीवन ₹ 2500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ₹ ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस,
शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही,
राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ₹ 9414172596, 9413384884
Email ₹ shivamantran@bkivv.org

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17- 20 of Each Month

● प्रकाशक एवं मुद्रक: ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डीबी कॉर्प लिमिटेड जयपुर से मुद्रित ● संपादक: ब्र.कु. कोमल ● संयुक्त संपादक: ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ● RNI No.: RJHIN/2013/53539